विशेष

12

भाषा शिक्षणशास्त्र

भाषा शिक्षण के इस मॉड्यूल में प्रमुख संसाधन व्यक्तियों और राज्य संसाधन समूहों को विभिन्न भारतीय संदर्भों में भाषा सीखने, शिक्षा में भाषा की स्थिति, भाषा सिखाने के तरीकों और भाषा आकलन के प्रयासों से परिचित कराने का प्रयास किया गया है। आरंभ में इसमें चर्चा और विचार करने के बिंदुओं के साथ भाषा सीखने-सिखाने पर मॉड्यूल, अवधारणाओं और विचारों के उद्देश्यों को प्रस्तुत किया गया है। इसमें कक्षा-कक्ष की परिस्थितियों और भाषा सीखने के विभिन्न कौशलों के साथ हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों में सीखने के शुरुआती चरणों से लेकर उच्च प्राथमिक स्तर तक की गतिविधियों को भी दर्शाया गया है। इसमें जेंडर, विशेष आवश्यकताओं, अन्य बच्चों के बीच समावेश जैसे सरोकारों को संबोधित करने के लिए विचारों और कार्यनीतियों को प्रस्तुत किया गया है। विचारों, गतिविधियों और प्रक्रियाओं को विभिन्न संदर्भों में अलग-अलग भारतीय भाषाओं में उपयुक्त रूप से अपनाया जा सकता है। इसके अंतिम खंड में मॉड्यूल से अधिगम और इसके उपयोगकर्ताओं की प्रतिपुष्टि का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया हैं। मॉड्यूल की रूपरेखा इस प्रकार है—

- भाषा सीखना और सीखने में भाषा की केंद्रीयता, भारत में भाषा सीखने-सिखाने की स्थिति, शिक्षा नीति में भाषा, त्रिभाषा सूत्र और बहुभाषावाद
- पहली, दूसरी और तीसरी भाषा के रूप में भाषाओं का शिक्षण
- भाषा शिक्षण और अधिगम के प्रतिफलों को पूरा करने के उद्देश्य
- भाषा कौशलों का शिक्षण- सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना; अँग्रेज़ी और हिंदी में चित्रों के साथ व्याकरण, शब्दावली और साहित्यिक पाठ्य सामग्री का शिक्षण
- भाषा का आकलन और इसकी प्रक्रियाएँ सतत आकलन, साथी-समूहों द्वारा आकलन, स्व आकलन और प्रतिफलों की रिपोर्टिंग
- राष्ट्रीय और शैक्षिक सरोकारों को संबोधित करना, जैसे— जेंडर, विशेष आवश्यकताएँ, बहुभाषिकता, विविधता और शिक्षण अधिगम संदर्भों में समावेश

अधिगम के उद्देश्य

इस मॉड्यूल में भाषा शिक्षण से संबंधित बिंदुओं पर राज्य संसाधन समूहों/मास्टर ट्रेनरों को सहयोग प्रदान करने का प्रयास किया गया है—

© NCERT not to be republished

- भाषा शिक्षा के विभिन्न पक्षों को समझना, जैसे— भाषा सीखने की प्रकृति, सीखने में भाषा की भूमिका, संसाधन और कार्यनीति के रूप में बहुभाषावाद, शिक्षा नीति में भाषा, भारतीय संदर्भों में भाषा शिक्षण के उद्देश्य, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में व्यक्त विचार और दर्शन (तत्व ज्ञान)
- शिक्षकों को साक्षरता और भाषा सीखने के लिए एकीकृत कौशल (एल.एस.आर.डब्ल्यू.) के दृष्टिकोण के साथ परिचित कराना, बच्चों में संवाद क्षमता विकसित करने के लिए संदर्भ आधारित गतिविधियों में संलग्न होना, प्रामाणिक पाठ्य प्रदान करना और शिक्षण दृष्टिकोण के रूप में आकलन।
- अध्ययन के विभिन्न चरणों के लिए भाषा शिक्षण अधिगम हेतु सीखने के प्रतिफल और शैक्षणिक प्रक्रिया की एक रूपरेखा बनाने में सक्षम होना।
- भाषा शिक्षण के लिए विभिन्न कार्यनीतियों का उपयोग करने पर शिक्षकों को संवेदनशील बनाना जिसमें भाषा कौशल— सुनना और बोलना, पढ़ना, लिखना और व्याकरण, शब्दावली का शिक्षण और अन्य कौशल आदि सम्मिलित हैं।
- सामान्य सरोकारों की समझ बनाना, जैसे— विद्यार्थी, जेंडर संबंधी मुद्दों, विशेष आवश्यकताओं, समावेशी कक्षा, विद्यालय आधारित पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा और अन्य ऐसे संगत मुद्दों को जानना।
- प्रक्रियाओं को समझना और निरंतर आकलन और सीखने के प्रतिफलों की रिपोर्टिंग के लिए कार्यनीतियों का उपयोग करना।
- विभिन्न विषय क्षेत्रों में प्रत्येक कक्षा के लिए निर्धारित सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए उन्हें शिक्षकों की क्षमता निर्मित करने में सक्षम बनाना।

भाषा और सीखना— भारत में भाषा सीखने की परिस्थितियाँ

भाषा, सभी मनुष्यों और समाज का एक अनिवार्य हिस्सा है। प्रत्येक बच्चा अपनी मातृभाषा/पहली भाषा को स्वाभाविक रूप से किसी गंभीर प्रयास के बिना सीख जाता है। इससे भाषाओं को सीखने के लिए मनुष्यों की प्राकृतिक प्रवृत्ति और विशेषताएँ प्रदर्शित होती हैं। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम औपचारिक या अनौपचारिक स्थितियों से कई और भाषाएँ सीखते हैं। हम भाषा कैसे सीखते हैं? भाषा सीखने या इसके अधिग्रहण में ऐसी प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं, जिनमें बच्चे अस्पष्ट या स्पष्ट रूप से कार्यनीतियाँ अपनाते हैं, जैसे— अवलोकन, वर्गीकरण, अनुमान लगाना और उसका सत्यापन इत्यादि। शिक्षा में भाषा की भूमिका को पूरी तरह से समझने के लिए, हमें भाषा की प्रकृति, जीवन और समाज के अन्य पक्षों के साथ इसके इंटरफ़ेस, भाषा सीखने के बारे में मान्यताओं और भाषा सीखने के लिए विद्यार्थी के प्रयासों को हम कैसे समर्थन दे सकते हैं, इन्हें जानना होगा।

भारत जैसे देशों में कई भाषाएँ प्रचलित हैं और एक विशिष्ट भारतीय कक्षा में बहुभाषी लोग मिल सकते हैं। बच्चे अपनी मातृभाषा सीखकर विद्यालय आते हैं और एक साथ या बाद में राज्य विद्यालय की भाषा सीखते हैं। वे अंग्रेज़ी जैसी विदेशी भाषा भी सीखते हैं, जिसे अधिकांश भारतीय स्थितियों में दूसरी

© NCERT not to be republished

भाषा के रूप में माना जाता है। भाषा के शिक्षकों के रूप में हमें यह समझने और विचार करने की आवश्यकता है कि भाषा कैसे सीखी जाती है और हमारी कक्षा के संदर्भों में भाषा सीखने के लिए परिस्थितियाँ कैसी हैं। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, हमें स्वयं से कुछ सवाल पूछने चाहिए। आप इन सवालों पर समूहों में चर्चा से कर सकते हैं।

चर्चा और चिंतन बिंदु

- क्या आपको याद है कि आपने अपनी मातृभाषा कैसे सीखी? क्या आप उन विशिष्ट विवरण/स्थितियों को याद कर सकते हैं और अपनी पहली/मातृभाषा सीखने के अनुभवों को लिख सकते हैं? दूसरी भाषा सीखने के अपने अनुभवों को लिखने का प्रयास करें?
- आपको क्या लगता है कि मातृभाषा और दूसरी भाषा सीखने के इन दोनों अनुभवों में कोई अंतर है? क्या इन्हें सीखने के चरण समान हैं?
- क्या हम कक्षा में भाषाओं और विषयों की सामग्री के शिक्षण-अधिगम में बच्चों की भाषाओं का उपयोग कर सकते हैं?

जब हमारे बच्चे विद्यालय में प्रवेश करते हैं तो वे अपनी एक भाषा अर्थात अपनी मातृभाषा सीखकर आते हैं। वे अपनी उम्र और संज्ञानात्मक स्तर के अनुसार भाषा को अच्छी तरह जानते हैं। वे अपनी भाषा में किसी के साथ भी बातचीत कर सकते हैं। भाषा के शिक्षकों के रूप में हमें यह मालूम होना चाहिए कि भाषा के प्रति बच्चों की जागरूकता और ज्ञान का उपयोग कैसे किया जाए ताकि पहली भाषा की शिक्षा को आगे बढ़ाया जा सके और जिसके ज़रिए उन्हें दूसरी और तीसरी भाषा सीखने में सहयोग प्रदान किया जा सके। विद्यार्थियों में भाषा के प्रति इतनी जागरूकता मौजूद है कि वे जानते हैं कि आवाज़ से शब्द कैसे बनते हैं और शब्द मिलकर एक साथ सार्थक वाक्य बनाते हैं। इससे पता चलता है कि उनके पास अपना एक आंतरिक व्याकरण है और वे इसका उपयोग करना जानते हैं। (इसका अर्थ यह नहीं है कि वे व्याकरण के नियमों को अच्छी तरह से जानते हैं।) बच्चे जो भी सीखकर कक्षा में आते हैं, उसे अपनी कक्षा में हमें बेहतर बनाना होगा और उन्हें दूसरी/नयी भाषा जैसे अँग्रेज़ी/किसी दूसरी भाषा को सिखाने के लिए आगे बढ़ाना होगा।

बहुभाषावाद

- बहुभाषावाद भारतीय पहचान को बनाने वाला घटक है।
- बहुभाषावाद एक प्राकृतिक घटना है जो सकारात्मक रूप से संज्ञानात्मक लचीलेपन और विद्वानों की उपलब्धि से संबंधित है।
- हाल में किए गए कई अध्ययनों में संज्ञानात्मक वृद्धि और विद्वानों की उपलब्धि के साथ द्विभाषावाद के सकारात्मक संबंध को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित किया गया है।
- द्विभाषी बच्चों का न केवल कई अलग-अलग भाषाओं पर नियंत्रण होता है, बल्कि शैक्षिक रूप से वे अधिक रचनात्मक और सामाजिक रूप से अधिक सहिष्णु भी होते हैं।
- भाषा संबंधी कौशलों की विस्तृत श्रृंखला जो उन्हें नियंत्रित करती है, इसी के ज़रिए वे विभिन्न सामाजिक स्थितियों पर अधिक कुशलता से

बातचीत करने के लिए तैयार भी होते हैं। यह दर्शाने के लिए भी पर्याप्त साक्ष्य हैं कि द्विभाषी बच्चे विविध प्रकार के विचारों में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं।

- अब जब हम बहुभाषावाद, संज्ञानात्मक विकास और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध के बारे में जानते हैं, तो विद्यालयों में बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने की भी आवश्यकता है।

भाषा समृद्ध वातावरण बनाना

पहली भाषा तथा अन्य भाषाओं और ज्ञान के बीच पुल बनाने के लिए संसाधनों के रूप में विद्यार्थियों की भाषाओं और ज्ञान का उपयोग करना, कक्षा में बहुभाषिकता को शामिल करने की कार्यनीतियों में से एक है। समग्र रूप में कक्षा-कक्ष बहुभाषावाद के लिए एक समृद्ध संसाधन है।

पहली, दूसरी और तीसरी भाषा के रूप में भाषाएँ सीखना

हम जानते हैं कि मातृभाषा/पहली भाषा को बहुत सचेत प्रयास के बिना सीखा जाता है क्योंकि यह भाषा विद्यार्थियों के आस-पास/ वातावरण में होती है। दूसरी या विदेशी भाषा की शिक्षण-अधिगम स्थितियों के मामले में ऐसा नहीं है। दूसरी भाषा विद्यार्थियों के लिए उनके परिवेश में स्वाभाविक रूप से उपलब्ध नहीं होती, इससे विद्यार्थियों को इस भाषा के साथ सीमित जुड़ाव और संपर्क में आने के कम अवसर मिलते हैं। भारत में गैर-अंग्रेज़ी माध्यमों या कम संसाधनों वाले अंग्रेजी माध्यमों अँग्रेज़ी भाषा का शिक्षण-अधिगम या राज्यों/क्षेत्रों में किसी भी भारतीय भाषा का शिक्षण-अधिगम, जहाँ वह भाषा प्रमुख भाषा नहीं है (जैसे— गैर-हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी), को ऐसी ही स्थितियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए पहली, दूसरी या तीसरी भाषा के रूप में भाषा के शिक्षण-अधिगम के लिए कार्यनीतियों में अलग-अलग तरीकों यानी प्रक्रियाओं की जरूरत होती है।

पहली भाषा के रूप में भाषा सीखने के लिए पाठ्यक्रम और सामग्री प्रामाणिक साहित्यिक और गैर-साहित्यिक पाठ्य सामग्री पर केंद्रित होती है और यह इस बात पर भी केंद्रित होती है कि भाषा का विस्तारित उपयोग किस प्रकार विविध संदर्भों में किया जाता है। दूसरी भाषा की स्थिति को इन संदर्भों में भाषा के साथ जोड़कर आगे बढ़ाने की आवश्यकता है और फिर बच्चों को उच्चतर भाषा कौशल की ओर ले जाने का प्रयास किया जाता है। दोनों स्थितियों में एक भाषा सीखने (कौशल और व्याकरण सीखने के मामले में) से दूसरे में लाभ पहुँचता है। दूसरे शब्दों में, भाषा विज्ञान संकाय बच्चों में किसी भी भाषा को सीखने को समर्थन देने के लिए इसे पूर्ण रूप में विकसित करता है। यहाँ विशिष्ट भारतीय संदर्भों से दो दृष्टांत मिलते हैं जहाँ भारतीय भाषाएँ दूसरी या तीसरी भाषा के रूप में एक ही भाषा वाले समुदाय में और दूसरी भाषा की सामुदायिक स्थितियों में भी मिलती हैं।

अन्य क्षेत्रों में हिंदी, उर्दू या किसी भी भारतीय भाषा को दूसरी और तीसरी भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। उदाहरण के लिए, हिंदी दक्षिणी राज्यों और पूर्वोत्तर राज्यों में एक में तीसरी भाषा है। किसी भाषा (जैसे हिंदी) को पढ़ाने के लिए पढ़ाने की सामग्री और शैक्षणिक प्रक्रियाएँ उस भाषा का गढ़ (हिंदी पट्टी) माने गए क्षेत्रों में उसे पहली भाषा के रूप में पढ़ाए जाने के तरीकों से अलग होता है। अन्य उदाहरणों में ओडिशा, सिक्किम, नागालैंड, मणिपुर, झारखंड, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में आदिवासी/गौण भाषाओं की स्थिति को ले सकते हैं। आइए, सिक्किम राज्य का उदाहरण लें जहाँ शिक्षा का माध्यम अँग्रेज़ी है और आधिकारिक तौर पर पहली भाषा भी अँग्रेज़ी है। बच्चों की मातृभाषा दूसरी भाषा के रूप में है और हिंदी तीसरी भाषा है। इससे भाषा की कक्षा बहुत अधिक जटिल हो जाती है। अंग्रेज़ी, विद्यालय के बाहर के वातावरण में नहीं है, परंतु विद्यालय में कई बार यह पहली भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है जिसके लिए द्वितीय भाषा के शिक्षणशास्त्र को अपनाया जाता है। ऐसी स्थिति में शिक्षक किस प्रकार अपने पाठ की योजना बनाएँ?

चर्चा और चिंतन-बिंदु

- जब बच्चे दूसरी या तीसरी भाषा सीखना शुरू करते हैं, तो वे पहले से ही पहली भाषा जानते हैं। वे पहली भाषा की वर्णमाला के अक्षर जानते हैं तथा इन्हें बोल और पढ़ सकते हैं। क्या इसका अर्थ यह है कि अध्यापक लिखित रूप में वर्णमाला के परिचित शब्दों और अक्षरों के साथ तीसरी भाषा शुरू कर सकता है?
- आपके राज्य में कितनी भाषाएँ सिखायी या प्रस्तावित की जाती है? क्या आपको लगता है कि आपके राज्य में त्रिभाषा सूत्र प्रभावी रूप से लागू है?

पाठ्यचर्या में भाषा— अधिगम में भाषा की केंद्रीयता को प्रोत्साहन

प्रत्येक अध्यापक को भाषा अध्यापक होना चाहिए, क्योंकि विषयों की पाठ्य सामग्री के शिक्षण-अधिगम में भाषा की एक अहम भूमिका होती है। भाषा को सीखना, विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन, सामाजिक विज्ञान, गणित आदि सीखने के साथ होता है। भाषा के माध्यम से विचारों और पाठ्य सामग्री को संप्रेषित किया और समझा जाता है। विभिन्न विषयों में पाठ और गतिविधियों की योजना बनाने में भाषा सीखने पर ध्यान देने से पाठ्य सामग्री और भाषा दोनों के लिए लाभ होगा। विषयों की विषयवस्तुओं पर काम कराने से विषयों के शिक्षण-अधिगम को और भाषा के शिक्षण को बढ़ावा मिलेगा। इस मामले में सीखना प्रामाणिक हो जाता है, क्योंकि विद्यार्थी पूरी तरह से भाषा को उसके संदर्भ और अर्थपूर्ण स्थितियों में उपयोग करने में शामिल हो जाते हैं। यहाँ दो ऐसे कार्य हैं, जिनका लक्ष्य पाठ्यचर्या के दौरान भाषा सीखना है।

कार्य I

विद्यार्थियों को चार के समूहों में अपने आस-पास से पानी' विषय पर शब्दों और वाक्यांशों को देखने और इकट्ठा करने और इनका उपयोग लोगों द्वारा कैसे किया जाता है, इसकी जानकारी इकट्ठा करने के लिए कहा

जाता है। विद्यार्थियों को इन शब्दों और वाक्यांशों को चार्ट पेपर पर लिखने और कक्षा की दीवारों पर प्रदर्शित करने के लिए कहा जाता है। इन शब्दों और वाक्यांशों तथा विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन, सामाजिक विज्ञान आदि जैसे विषयों का उपयोग करके प्रत्येक समूह द्वारा लेख तैयार किया जा सकता है।

कार्य II

परियोजना कार्य करते हुए विद्यार्थी सभी विषयों के एकीकरण का अनुभव कर सकते हैं। यहाँ एक उदाहरण दिया गया है।

- एक ऐतिहासिक स्थल के भ्रमण/यात्रा की योजना बनाना
- विषय— भूगोल, इतिहास, भाषा
- भाषा कौशल— सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, विश्लेषण करना और आलोचनात्मक चिंतन

विद्यार्थी अपने आस-पास के पर्यटन स्थल की यात्रा की योजना बनाकर एक यात्रा कार्यक्रम तैयार कर सकते हैं। अध्यापक उनके रहने के लिए होटल/गेस्ट हाउस, वाहन, बस या ट्रेन टिकट बुक करने में उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं।

विद्यार्थी निम्नलिखित बिंदुओं का अवलोकन कर उन्हें नोट करें—

- भौगोलिक स्थिति,
- मौसम और जलवायु,
- ऐतिहासिक महत्व,
- वास्तुकला, कला और सौंदर्यशास्त्र,
- आस-पास बोली जाने वाली भाषा,
- साइनबोर्ड पर उपलब्ध जानकारी,
- पर्यावरण संबंधी जानकारी—कचरे के डिब्बे, हरियाली, सार्वजनिक शौचालय आदि। भ्रमण/यात्रा के बाद, विद्यार्थी अपने नोट्स साझा करें और उन पर चर्चा करके एक रिपोर्ट या कहानी के रूप में अपने अनुभव लिख सकते हैं।

आइए, एक नज़र डालते हैं कि अध्यापक बच्चों को अँग्रेज़ी भाषा से परिचित कराने के लिए क्या करते हैं।

अध्यापक अभ्यास

रेखा रानी, उत्तर प्रदेश के नसीरपुर के सरकारी माध्यमिक विद्यालय में कक्षा 1 और 2 के बच्चों को पढ़ाती है। वह अपने बच्चों को उनकी मातृभाषा और अंग्रेज़ी में आत्मविश्वास के साथ बोलने को प्रेरित करती हैं। वह अपने बच्चों को अपनी मातृभाषा और अँग्रेज़ी में गाने के लिए कहती है। वह बड़े अक्षरों में एक कागज़ पर वस्तुओं के नाम लिखती है और दीवारों पर चिपका देती है ताकि बच्चे वस्तुओं के नामों पर ध्यान दें और उनका उपयोग करें। वह औपचारिक संबोधन का भी इस्तेमाल करती है, जैसे—

क्या मैं अंदर आ सकती हूँ?
आप कैसे हैं?
क्या मैं आपकी कलम उधार ले सकती हूँ?
क्या मैं शौचालय जा सकती हूँ?
आपके बैग का मूल्य क्या है?
क्या आप लाइट बंद कर देंगे?
मैं आपसे क्षमा चाहती हूँ।
कृपया शांत रहें।

उन्होंने अपने सभी बच्चों को कक्षा में और विद्यालय में उपलब्ध वस्तुओं और चीज़ों के नाम

© NCERT not to be republished

अंग्रेज़ी और हिंदी में लिखकर दिए हैं। वस्तुओं के नाम दरवाज़े, खिड़की, मेज़, ब्लैकबोर्ड, छत, पानी के बर्तन आदि पूरे वाक्यों में लिखे गए हैं, जैसे— यह एक दरवाज़ा है, ये खिड़कियाँ है, आदि। वे कहती हैं, "इससे मेरे बच्चों को भाषा के अर्थों को जानने में मदद मिलेगी, यानी शब्द और पूरे वाक्यांश, जैसे— "क्या मैं शौचालय जा सकता/सकती हूँ?" यहाँ बच्चे पहले इस अर्थ को समझते हैं कि यह व्याकरण के नियमों को जानने के बजाय, शौचालय जाने का अनुरोध है। एक बार अर्थ ज्ञात हो जाने पर व्याकरणिक समझ अपने आप विकसित हो सकती है। अंग्रेज़ी में चीज़ों और वस्तुओं के नाम लिखने की दूसरी गतिविधि के लिए, वह कहती हैं, इससे पर्यावरण में दिखाई देने वाली भाषा को ध्यान रखने में बच्चों को मदद मिलती है।"

भाषा समृद्ध वातावरण बनाना

बच्चों को अच्छी तरह से भाषा सीखने के लिए भाषा सार्थक सदर्भों में उपयोग करने की आवश्यकता होती है। इसे इस तरह कहा जा सकता है, किसी काम को करने के ज़रिए, इसे करना सीखना"।

कोई पानी में जाए बिना तैरने की कोशिश नहीं कर सकता और तैरना नहीं सीख सकता। भाषा सीखने से बच्चों को भाषा के बारे में ध्यान देने और (नयी) भाषा के संपर्क में आने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। ऊपर दिए गए अध्यापक अभ्यास में अध्यापक/अध्यापिका यह अच्छी तरह से जानते हैं कि बच्चों को उनके द्वारा उपयोग किए जा रहे अलग-अलग शब्दों की संरचना और कार्यों के बारे में नहीं पता हो सकता है, लेकिन वे उनका अर्थ जानते हैं। संचार का उद्देश्य एक संदर्भ में है। ऐसे वाक्यांशों और वाक्यों का उपयोग करने की प्रक्रियाओं के दौरान (हम उन्हें 'भाषा के रूप में कह सकते हैं') बच्चे किसी चिंता के बिना अवचेतन रूप से भाषा सीखते हैं और वे अपनी बातचीत में अनायास उसका उपयोग करना शुरू कर देते हैं। यह 'सहयोग समृद्ध वातावरण' जहाँ बच्चों द्वारा भाषा को देखा, नोटिस किया और उपयोग किया जाता है, बच्चों को भाषा सीखने में मदद करता है और इससे भाषा में उनकी दक्षता भी बढ़ती है। यह केवल कक्षा में 'भाषा समृद्ध सहयोग' प्रदान करने के लिए ही पर्याप्त नहीं है, बच्चों के लिए अपने साथियों और शिक्षकों के साथ बातचीत करना और सहयोग के समय के दौरान उन्हें दिए गए उद्देश्यों से अधिक भाषा का उपयोग करना भी आवश्यक है। अध्यापक की भाषा के ज़रिए बच्चों द्वारा सीखी गई भाषा और पाठ्यपुस्तकों व पुरक पुस्तकों जैसी मुद्रित सामग्री को कक्षा में बातचीत द्वारा समर्थन देने की आवश्यकता होती है। अपने साथियों के साथ और शिक्षकों व अन्य लोगों के साथ बातचीत से बच्चों को भाषा उद्देश्यों के लिए भाषा का उपयोग करने हेतु प्रोत्साहन मिलता है। इससे बच्चे भाषा को उचित संदर्भ में हासिल करने/सीखने में सक्षम बनते हैं।

विद्यार्थियों को बुनियादी आपसी संचार के कौशल (बी.आई.सी.एस.) और संज्ञानात्मक उन्नति प्रवीणता (सी.ए.एल.पी.) (कमिंस और स्वैन, 1986) दोनों का विकास करना चाहिए। बुनियादी आपसी संचार के कौशलों के साथ जुड़ी हुई भाषा की क्षमता में काफ़ी हद तक उन परिस्थितियों में प्रभावी ढंग से प्रदर्शन करने के लिए कौशल शामिल होते हैं जो

संदर्भ के मामले में समृद्ध हैं और अनुभूति के स्तर पर कोई माँग नहीं करते हैं। अब यहाँ की भाषा और साथी-समूह की बातचीत बुनियादी आपसी संचार के कौशलों के क्षेत्र से संबंधित है। सी.ए.एल.पी. स्तर की क्षमताओं को संगत रूप से खराब और संज्ञानात्मक रूप से माँग की स्थितियों में प्रभावी रूप से प्रदर्शन करने की आवश्यकता होती है। इसे आमतौर पर निर्देशित भाषा व्यवस्था के माध्यम से प्राप्त किया जाएगा।

भाषा सीखने के लिए कार्यनीतियाँ

- कक्षा अनुकूल माहौल बनाएँ और सुनिश्चित करें कि सभी बच्चे भाग लें।
- बच्चों के भाषा सीखने को दैनिक जीवन, संस्कृति और समाज से जोड़ें।
- कक्षा में साझा कार्य, समूह कार्य प्रभावी ढंग से बातचीत जैसी गतिविधियों की योजना बनाएँ और उपयोग करें।
- पढ़ने, साथ में पढ़ने और अध्ययन समूहों को बढ़ावा देने के लिए कक्षा पुस्तकालय बनाएँ।
- सभी चार कौशलों को सिखाने के लिए एक कार्यनीति के रूप में रोल-प्ले (भूमिका निर्वहन) और कहानी सुनाने के तरीकों का उपयोग करें।
- दैनिक जीवन में घटने वाली घटनाओं पर सार्थक चिंतन करें।
- कक्षा में मीडिया सहयोग, जैसे— पत्रिकाओं, समाचार पत्र, आई.सी.टी. आदि का उपयोग करें।

चर्चा और चिंतन-बिंदु

- एक अध्यापक अपनी कक्षा में और विद्यालय में भाषा समृद्ध वातावरण कैसे बना सकता है?
- अध्यापक बच्चों में बी.आई.सी.एस. और सी.ए.एल.पी. को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं?

इस मॉड्यूल में, उच्च प्राथमिक स्तर तक प्रारंभिक साक्षरता के उदाहरणों के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है और इन्हें विद्यार्थियों की उम्र, बातचीत, स्तर और संदर्भ के अनुसार अनुकूलित/स्वीकृत किया जा सकता है।

प्रारंभिक वर्षों में भाषा और साक्षरता (कक्षा 1 और 2 के संदर्भ में)

विद्यालय आने पर कम-से-कम एक बोली जाने वाली भाषा पर पहले से ही बच्चों का अच्छा नियंत्रण होता है। वे रोज़मर्रा के जीवन में अपने आस-पास लिखे हुए शब्दों (Enviornment Print) को देखते हुए (आड़े-तिरछे शुरुआती लेखन) उन्हें थोड़ा-थोड़ा जानते हैं और उन्होंने दीवारों, मिट्टी, कागज़, किताबों आदि पर स्क्रिबलिंग के माध्यम से संचार के लिखित रूपों को भी अनुभव किया होता है। बच्चों के ये अनुभव इस तथ्य को दर्शाते हैं कि पढ़ना और लिखना, बच्चों के बीच एक ही समय में विकसित होते हैं और ये आपस में संबंधित होते हैं। बच्चे पहले पढ़ना और बाद में लिखना, इस क्रम में नहीं सीखते हैं। पढ़ने की तुलना में कुछ बच्चों के लिए लिखना अक्सर आसान लगता है (क्ले, 1991)। बच्चों की दैनिक टिप्पणियों से पता चलता है कि सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना किसी भी तरह से रैखिक या अलग प्रक्रिया नहीं है। साक्षरता सीखने पर किए गए शोध से स्पष्ट होता है

कि जब बच्चे साक्षर हो जाते हैं तो पढ़ने, लिखने, सुनने, देखने और सोचने की प्रक्रियाएँ एक साथ विकसित होती हैं (कूपर, 2000)। विद्यालयों में, इन शोध निष्कर्षों और सीखने की प्रक्रियाओं में बच्चों के समृद्ध अनुभवों का निर्माण किया जाना चाहिए।

पढ़ने की सभी स्थितियों में 'लक्ष्य समझना' होना चाहिए। यह ज़रूरी है कि मुद्रित पाठ में संदेश को समझा जाए। साक्षरता को केवल डिकोडिंग के रूप में नहीं देखा जा सकता है, बल्कि यह पढ़ने की पूरी क्रिया है, जिसमें समझ (मेसन और सिन्हा, 1993) शामिल है। उभरने वाली साक्षरता का परिप्रेक्ष्य, रुचि सहित सार्थक पाठ्य सामग्री के उद्देश्यों के साथ मेल-जोल से साक्षरता सीखने का समर्थन करता है।

यह परिप्रेक्ष्य भाषा के सभी पक्षों (शब्दार्थ, वाक्य-विन्यास और ग्राफ़ो-फोनिक) पर केंद्रित है (सिन्हा, 2000)।

पढ़ना और लिखना दोनों ही अर्थ बनाने का काम करते हैं। बच्चे पढ़ने को सार्थक बनाने के लिए अपने पिछले अनुभवों और अन्य संगत संकेतों का उपयोग करते हैं और अपने लेखन में सार्थक पाठ्य सामग्री की रचना करते हैं। इस समझ से शिक्षकों को पारंपरिक तौर-तरीकों से दूर रहने का अधिकार मिलता है और उन्हें अपनी कक्षाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं के साथ रचनात्मक रूप से निपटने के अवसर प्रदान किए जाते हैं।

बच्चों के लिए साहित्य

यह महत्वपूर्ण है कि बच्चों के पास उन पुस्तकों तक पहुँच हो, जो उनके साक्षरता कौशल को बढ़ाने के लिए हैं। बच्चों के लिए साहित्य को उनके पढ़ने की सामग्री का एक प्रामाणिक स्रोत माना जाता है। साक्षरता और भाषा सीखने के शुरुआती वर्षों में, साहित्य सीखने का एक अनिवार्य स्रोत बन जाता है। इसमें भाषा सीखने पर बच्चों से सहज प्रतिक्रिया प्राप्त की जाती है जिससे इसका मार्ग प्रशस्त होता है। बच्चों को कहानियाँ पढ़कर सुनाने से एक एकीकृत तरीके से उनके सामने भाषा कौशल सीखने की प्रक्रिया को खोला जाता है। उदाहरण के लिए, इस तरह की कोई कहानी या कविता उन्हें पढ़ने, सुनने, बोलने और लिखने के लिए प्रेरित करती है। हालाँकि उम्र, रुचि, भाषा और उपयुक्त विषयों को ध्यान में रखते हुए बच्चों के लिए साहित्य चयन के कुछ मानदंड विकसित करना भी महत्वपूर्ण है।

बच्चों के लिए साहित्य के कुछ रूप निम्नलिखित हैं। आप शिक्षकों को साहित्य सूची में और नाम जोड़ने के लिए भी कह सकते हैं। बच्चों के लिए कहानियों/कविताओं/नाटकों और पुस्तकों के कुछ उदाहरण दें। आप बच्चों के लिए आई.सी.टी. आधारित सामग्री भी जोड़ सकते हैं।

- आरंभिक पाठकों के लिए चित्र पुस्तकें और 'पढ़ने की शुरुआत' करने वाली किताबें,
- परियों की कहानियाँ,
- पशुओं की कहानियाँ,
- लोक कथाएँ, कविताएँ और गीत,
- मिथक और किंवदंतियाँ,
- क्लासिक्स कहानियाँ,
- यात्रा-संबंधी और साहसिक कहानियाँ,
- ऐतिहासिक नायकों/नायिकाओं की कहानियाँ।

एक कहानी का उदाहरण नीचे दिया गया है। शिक्षकों को इसके और अधिक उदाहरण लाने के

लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। वे अपनी ज़रूरतों के अनुसार इस कहानी को संशोधित कर सकते हैं।

आदर्श 1

पुस्तक का शीर्षक — *एक कौवे की कथा*
लेखक और इलस्ट्रेटर — जुधाजीत सेन गुप्ता
प्रकाशक — नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत
कक्षा — I और II

परिचय— यह एक चित्रमय कहानी है। कहानी में मुख्य किरदार एक कौआ है। कौए ने तिनके एकत्र किए और घोंसला बनाने के लिए उन्हें एक साथ रखा और उसमें अंडे दिए। उसने अपने बच्चों की तब तक देखभाल की, जब तक वे उड़ने में सक्षम नहीं हो गए।

संभव गतिविधियाँ

चरण 1— एक कहानी बुनना

- शिक्षक बच्चों को कहानी का कवर पेज दिखाकर बच्चों के मन में जो कुछ भी आता है, उस पर प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं— शब्द, वाक्यांश, संबंधित अनुभव आदि।
- किताब में दी गई तस्वीरों की मदद से बच्चों के साथ कहानी चुनने की कोशिश करें।
  - यह एक चित्रमय कहानी है और बच्चों को पहली बार चित्रों से परिचित कराया जाएगा, इसलिए उनके विभिन्न अनुमानों को स्वीकार करें। इसके अलावा, उन्हें अपनी तरफ से इसके बारे में अनुमान लगाने के पीछे के कारणों को व्यक्त करने का अवसर दें।
  - यह महत्वपूर्ण है कि अध्यापक बच्चों को किसी पूर्व निर्धारित कहानी की ओर ले जाने की कोशिश न करें, बल्कि उन्हें कहानी के अगले भाग का अनुमान लगाने के लिए अपनी कल्पना और जिज्ञासा व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
  - इसके अलावा, बच्चों को कहानी में पात्रों के नाम बताने के लिए प्रोत्साहित करें। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, बच्चों को संबंधित अनुभवों के बारे में बात करने का अवसर प्रदान करें, सवालों के जवाब पाने की कोशिश करें, जैसे— क्या आपके घर में पालतू जानवर हैं? उनकी देखभाल कौन करता है और कैसे?
  - पढ़ी गई पुस्तकों की एक सूची बुलेटिन बोर्ड पर तैयार करें और इसमें नयी पुस्तकें जोड़ते रहें। पढ़ने के स्थान पर बच्चों के पढ़ने के लिए पुस्तकें रखें।

चरण 2— कहानी लिखना और पढ़ना

बच्चों को कहानी सुनाएँ। अध्यापक एक चार्ट पर विवरण लिख सकते हैं। फिर अध्यापक इसे विद्यार्थियों के सामने प्रत्येक शब्द के नीचे उँगली रखकर उसे पढ़ते हुए पढ़ाते हैं।

चरण 3— अवलोकन

बच्चों को विभिन्न प्रकार के पक्षियों को देखने के उनके अनुभवों के बारे में बात करने का अवसर प्रदान करें। इससे विभिन्न भाषाओं में पक्षियों के नामों के माध्यम से, बहुभाषिकता की अवधारणा को लाया जा सकता है। इन्हें कहानी के साथ जोड़ें। उदाहरण के लिए, पक्षी क्या करते हैं? आपने पक्षियों को कहाँ देखा है? क्या आपने किसी पक्षी-पक्षियों का घोंसला देखा है?

चरण 4— अवलोकन चार्ट

प्रेक्षणों पर विस्तार करते हुए, कला में एकीकृत अधिगम (सीखने) को पेश किया जा सकता है। बच्चों को एक स्क्रैपबुक, चार्ट पेपर पर विभिन्न पक्षियों के चित्र बनाने या चिपकाने और उसमें अपना नाम लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इससे कक्षा में प्रिंट-समृद्ध वातावरण तैयार होगा।

इन प्रारंभिक गतिविधियों के बाद इसे आगे बढ़ाया जा सकता है—

- पर्यावरण की बात करना।
- पक्षियों के रंग, संख्या, आकार और उनकी आवाज़ों के बारे में बात करना।
- पक्षियों के लिए पानी और भोजन रखना।

अध्यापक बच्चों के भाषा कौशल, संचार कौशलों, बच्चों की भागीदारी और उनके शामिल होने, अपने साथियों के साथ अनुभव साझा करने की क्षमता आदि के आधार पर आकलन कर सकते हैं।

छोटे विद्यार्थियों को कहानी सुनाना

भाषा अर्जन के लिए कहानी सुनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे भाषा के साथ जुड़ने के अवसर प्रदान किए जाते हैं और विद्यार्थियों को भाषा का सृजन करने के लिए प्रेरित किया जाता है। कहानियों के द्वारा सभी आयुवर्ग के लोगों, विशेष रूप से बच्चों की कल्पना को एक उड़ान मिलती है। ज़ोर से कहानी पढ़ने का लक्ष्य विद्यार्थियों को भाषा की ध्वनियों से परिचित कराना है। बच्चों के लिए ज़्यादातर कहानियों में वाक्यांश होते हैं जिन्हें दोहराया जाता है। एक अध्यापक/अध्यापिका को ऐसी कहानी चुननी चाहिए जिसमें कहानी के कार्यों से संबंधित चित्र हों। वह बच्चों को कई बार सुनने के अवसर प्रदान करने के लिए उस कहानी को कई बार सुनता/सुनती/पढ़ता/पढ़ती है। इस सुदृढ़ीकरण से शब्दावली की विविधता, वाक्यांशों आदि को सुनिश्चित किया जाता है। जब बच्चे कहानी दोहराते हैं, तो वे इससे भाषा का सार्थक हिस्सा दोहराते हैं।

उद्देश्य—

- लक्ष्य भाषा को सार्थक स्थिति में लाना।
- सामाजिक-व्यक्तिगत गुणों का विकास करना।
- सहानुभूति, साथी की भावना आदि जैसे मूल्यों को विकसित करना।
- कला, भूमिका आदि के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यक्त करने में मदद करना।
- समझ के साथ एल. एस. आर. डब्ल्यू. व अन्य कौशल विकसित करना ।
- आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक चिंतन।
- रचनात्मकता और कल्पना को बढ़ाना।
- जब विद्यार्थी कहानी को दोहराते हैं, तो उन्हें देखकर आकलन करना; कहानी को दोहराने में उनकी रचनात्मकता को देखना, कहानी को विस्तार देना, जैसे— पात्रों को पसंद और नापसंद करना, शब्दावली का उपयोग, आवाज़ का मॉड्यूलेशन आदि।

आदर्श 2

गतिविधि 1 (शुरुआत)

अध्यापक वह कहानी चुनता है जिसमें बहुत दोहराव होता है और अध्यापक इसमें किए गए कार्यों को स्वयं प्रस्तुत कर सकता है। अध्यापक बार-बार कहानी पढ़ता है और विद्यार्थियों को कहानी को याद कराने के लिए रुकता है और फिर आगे बढ़ता है। यह एक

स्वत: प्रक्रिया है और इससे भाषा को सार्थक तरीके से सीखा जा सकेगा।

गतिविधि 2 (प्राथमिक विद्यार्थी)

विद्यार्थी कहानी बनाने में एक-दूसरे की मदद करेंगे। अध्यापक या लीडर इस कहानी की शुरुआत बताएगा। प्रत्येक विद्यार्थी स्थितियों, घटनाओं, नए पात्रों आदि को जोड़कर कहानी को जारी रखेगा। वे कहानी कहते समय इसमें अभिव्यक्ति, आवाज़ के उतार-चढ़ाव, विराम, विस्मयादिबोधक शब्द, आश्चर्य, ध्वनियाँ आदि जोड़ सकते हैं। यहाँ विद्यार्थी कोड में बदलाव या कोड मिश्रित कर सकते हैं। कहानी सुनाते समय विद्यार्थियों के व्याकरण और उच्चारण को सही करने के लिए अध्यापक द्वारा कोई प्रयास नहीं किया जाना चाहिए।

इस गतिविधि से विद्यार्थियों को तनावमुक्त वातावरण भाषा के उपयोग को सीखने में मदद मिलेगी। वे अपनी कल्पना और रचनात्मकता का उपयोग करेंगे और आवाज़ के मॉड्यूलेशन के माध्यम से नाटकीय प्रभाव जोड़ेंगे। अध्यापक विद्यार्थियों द्वारा बनायी गई कहानी को बाद में लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत कर सकते हैं।

गतिविधि 3 (उच्च प्राथमिक विद्यार्थी)

चित्रात्मक प्रदर्शन के माध्यम से एक कहानी लिखना।

अध्यापक विद्यार्थियों को एक कहानी पर आधारित चित्रों की एक श्रृंखला प्रदान करेगा। वह चित्रों को ध्यान से देखने, समूहों में काम करने, चित्रों की रूपरेखा विकसित करने के लिए कह सकता है। विद्यार्थी चित्रों में पात्रों और स्थितियों के बारे में चर्चा कर सकते हैं। अब वे अपनी रूपरेखा और चर्चा को ध्यान में रखते हुए समूहों में कहानी लिखते हैं। प्रत्येक समूह का एक सदस्य कहानी सुना सकता है। समूह उपयुक्त प्रॉप्स का उपयोग करके रोल-प्ले के माध्यम से प्रस्तुति दे सकता है। अध्यापक उन्हें स्क्रिप्ट, संवाद आदि लिखने में मार्गदर्शन दे सकते हैं।

चर्चा और चिंतन-बिंदु

- ये गतिविधियाँ और कार्य भाषा सीखने, मूल्य वृद्धि, कलाओं और पर्यावरण को बढ़ावा देने एवं देखभाल में कैसे मदद कर सकती हैं?
- इन गतिविधियों में हम आई.सी.टी. का उपयोग उचित रूप से कहाँ तक कर सकते हैं?

आदर्श 3

शुरुआती वर्षों में भाषा सीखना-सिखाना (कक्षा 1)

पतंग

कविता का नाम— पतंग, कवि—प्रयाग शुक्ल

परिचय— 'पतंग' एक मज़ेदार कविता है। पंक्तियों में लय और पतंग उड़ाने का मज़ा छुपा हुआ है। यह कविता प्रयाग शुक्ल द्वारा रचित है। प्रयाग शुक्ल बच्चों के लिए कविताएँ लिखते हैं। आप उनके तथा अन्य बाल लेखकों के कविता संग्रह को भी पढ़िए। कविताओं का इस्तेमाल बच्चों को कक्षा में पढ़ना-लिखना सीखने के अवसर देने के लिए कीजिए।

गतिविधियों के चुनाव हेतु संभावनाएँ

योजना

हम जानते हैं कि एक कविता में बुने हुए भाव और लय में एक किस्म का तालमेल होता है। कविता अपने में संजोए हुए संगीत/ध्वनियों और अर्थों से दो स्तरों पर पाठक को प्रभावित करती है। हमारी यह कोशिश

होनी चाहिए कि बच्चों के साथ मिलकर कविताओं को गाएँ, सुनें और उनकी ध्वनियों और लय का आनंद लें। साथ-ही-साथ उसके भाव को कुछ इस तरह से समझें कि बच्चों को उसमें अपने ही जीवन की झलक दिखायी दे। पतंग उड़ाने संबंधी बच्चों के अनुभवों पर बात करें।

पहला दिन

- कविता को हाव-भाव के साथ लय में गाएँ।
- बच्चों के साथ मिलकर जोश और पूरे हाव-भाव के साथ कविता को गाएँ।
- कविता के शब्दों (सर-सर, फर-फर...) में से निकल रही ध्वनियों की ओर बच्चों का ध्यान खीचें।
- बच्चों को इन ध्वनियों को महसूस करने का समय दें।

आप जानते ही हैं कि इस तरह की कविताएँ, जिनमें ध्वनि का महत्व होता है, मन को तरंगित करती हैं। आप चाहें तो पहले दिन की गतिविधि को यहीं तक सीमित रखें।

दूसरा दिन

दूसरे दिन के लिए कार्य-योजना बनाते समय सावधानी की आवश्यकता है। आपको कार्य योजना बनाते समय यह स्पष्ट होगा कि—

- आप बच्चों को पढ़ने-लिखने के अवसर दे रहे हैं।
- आप बच्चों को मन की बात कहने और लिखने की स्वतंत्रता दे रहे हैं।
- पढ़ने-लिखने और अभिव्यक्ति से मिल रहे बच्चों के आनंद को आप महसूस कर रहे हैं। ऐसा करने से आप कहीं-न-कहीं उन्हें साक्षरता के लिए आत्मनिर्भर बना रहे हैं।
- दूसरे दिन लय के साथ, सही विराम और गति के साथ कविता गाएँ।
- पतंग उड़ाने और एक-दूसरे की पतंग काटने पर बातचीत कीजिए।
- पतंगबाजी के किस्से और कहानियाँ सुनाएँ और बच्चों से भी सुनें।

© NCERT not to be republished

- बच्चों के साथ मिलकर पतंग उड़ाने और पतंगों की लड़ाई पर एक कहानी की रूपरेखा बनाएँ। (दूसरे दिन के लिए शायद इतना ही काफ़ी होगा। ऐसे निर्णय आप ही ले सकते हैं, परंतु निर्णय लेते समय ध्यान रखें कि गतिविधि एक मंज़िल या स्तर पर पहुँच 0जाए और उस कविता से और बहुत कुछ करने का उत्साह और उत्सुकता बरकरार रहे।)

तीसरा दिन

फिर से कविता पढ़ें और पिछले दिन की गतिविधियों को दोहरा दें। इन पंक्तियों को पढ़ने से हवा के गतिमान होने का एहसास होता है। शब्दों के दोहराव से यह एहसास और भी मज़बूत होता है, इसलिए कविता को सही आरोह-अवरोह के साथ पढ़ें। ऐसी चीज़ों की बातचीत बच्चों से करें जो सर्र, फर्र से हवा में उड़ जाती हैं, जैसे कि—

- जहाज़ का हवा को चीरकर आसमान में उड़ना। कैसी आवाज़ें निकलती होंगी बच्चों से अनुमान लगाने के लिए कहिए— शूँ इत्यादि।
- आवाज़ों के आधार पर एक नई तुकबंदी वाली कविता तैयार की जा सकती है। पक्षियों का आसमान में उड़ान भरना, पेड़ों का हवा में लहराना, साँय-साँय की आवाज़े आदि। ऐसी अन्य आवाज़ों का अनुमान लगाएँ। ऐसे कुछ उदाहरण आप भी लिखें।

लड़ने में जुटी पतंग

इन पंक्तियों पर बातचीत करें।

अब दूसरे दिन, बनायी गई कहानी की रूपरेखा को पूरा करें। पतंगों को नाम दें और चित्र बनवाएँ। कुछ और बातचीत करें, जैसे कि अगर हम मैदान में खड़े होकर या घर की छत पर से पतंग उड़ा रहे हैं तो पतंग कटकर कहाँ-कहाँ गिर सकती है। बच्चों से पूछें कि लूटी गई पतंग को क्या नाम दिया जा सकता है, जैसे कि 'इनाम वाली पतंग', 'जीती पतंग' आदि। आप चाहें तो एक-दो दिन के अंतराल के बाद फिर से कविता पर लौटें। कोई भी नयी गतिविधि करवाने से पहले कविता को ज़रूर दोहराएँ। अब बच्चों के साथ मिलकर कक्षा में पतंग भी बनायी जा सकती है। कक्षा में पतंग बनाने के लिए सामान की सूची बनाएँ— माँझा, डोर, पूँछ, पतंग का कागज़ इत्यादि। यह सूची कक्षा की दीवार पर लगाएँ। यह गतिविधि पूरी कक्षा के साथ कर पाना संभव नहीं हो पाएगा। आप कुछ बच्चों को मौका दें। सूची में पतंग बनाने वाले समूह के बच्चों का नाम लिखें। शेष बच्चों को देखने का अवसर दें। भविष्य में बच्चों के अलग-अलग समूहों को गतिविधियाँ करने का मौका देते रहें।

पतंगें बन जाने के बाद यदि संभव हो तो बनाने वाले समूह को उसे उड़ाने का मौका दें। बच्चे उन पर कुछ लिखना भी चाहेंगे। जानने की कोशिश करें, उन्हें लिखने में मदद करें।

- अगर बच्चे अपनी-अपनी पतंग बना रहे हैं तो बच्चों को अपने दोस्त, रिश्तेदार आदि को पतंग पर चिट्ठी लिखने को भी कहा जा सकता है। (पतंग बनाने के लिए 'बरखा' पुस्तकमाला की किताब पतंग की भी मदद ली जा सकती है।)
- सभी बच्चे कौन-कौन-से खेल खेलते हैं, इसकी कक्षा में एक सूची भी बनायी जा सकती है जिसे कक्षा में लगाया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

इस गतिविधि को विस्तार देने के लिए 'बरखा' पुस्तकमाला की पीपनी और पतंग पर बातचीत करें। पीपनी बनाने के क्रम को बच्चों से सुनें। अगर संभव हो तो पीपनियाँ बनवाएँ। बच्चों के मन में यह बात लाने की कोशिश करें कि कक्षा में हम कुछ बनाना भी सीख रहे हैं। (स्त्रोत— लिखने की शुरुआत– एक संवाद, 2013, रा.शै.अ.प्र.प. नयी दिल्ली)

पढ़ने का कोना

कक्षा में पढ़ने के कोने का निर्माण करने से भाषा अधिग्रहण/सीखने के लिए एक वातावरण बनाने में मदद मिलती है। पढ़ने के कोने में विभिन्न प्रकार की किताबें रखनी चाहिए और ये बच्चों के लिए सुलभ होनी चाहिए। बच्चों को स्वतंत्र रूप से और उनकी रुचि के अनुसार, पुस्तकों का चयन करने और उन्हें पढ़ने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। पढ़ने के कोनों में बच्चों को जोड़ों और समूहों भाषा के संपर्क को सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की गतिविधियों में शामिल कर इस फलदायी रूप से बढ़ाया जा सकता है।

पढ़ने के कोने (रीडिंग कॉर्नर) के बारे में अधिक विवरण रा.शै.अ.प्र.प.— द्वारा विकसित विवरणिका रीडिंग कॉर्नर से प्राप्त किया जा सकता है। (www.ncert.nic.in)

प्रिंट समृद्ध वातावरण

प्रिंट समृद्ध वातावरण साक्षरता और भाषा सीखने का एक अभिन्न अंग है। इसमें बच्चों के लिए संदर्भ आधारित और प्रासंगिक सामग्री शामिल हैं। इसे बच्चों और शिक्षकों द्वारा एक साथ चुना जा सकता है— चित्र, तुकबंदी वाली कविताएँ, कहानियाँ आदि, जिसे समय-समय पर बदलने के कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं—

- बच्चों को चित्र देखने के लिए पर्याप्त समय दें।
- चित्र/पोस्टर से बच्चों को चीज़ों, व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में बात करने के अवसर मिलते हैं।
- कक्षा में बच्चों की कल्पनाशील दुनिया और रचनात्मकता को जगह दें, उन्हें अपनी कविताओं, कहानियों और संवादों को बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।
- बच्चों को खुद को अभिव्यक्त करने और चित्रों के आधार पर लिखने के लिए प्रोत्साहित करें। इस लेखन में सिर्फ़ ड्राइंग लाइनें, आविष्कृत वर्तनी या पारंपरिक लेखन शामिल हो सकते हैं।

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण, 2017 में, जो अधिगम के प्रतिफलों पर आधारित था, कक्षा 3, 5 और 8 के लिए सही प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत (औसतन) निम्नानुसार पाया गया है—

कक्षा 3	—	68 प्रतिशत
कक्षा 5	—	58 प्रतिशत
कक्षा 8	—	57 प्रतिशत

क्या आप अपने राज्य और ज़िले की औसत उपलब्धि के बारे में जानते हैं? अधिक विवरण http://www.neert.nic.in/programmes/NAS/SRC.html पर उपलब्ध हैं। इसे देखते हुए हमें भाषाओं में अपने बच्चों के सीखने के प्रतिफलों को कैसे सुधारना है, इस पर चिंतन करना होगा।

© NCERT not to be republished

भाषा सीखने के उद्देश्य और सीखने के प्रतिफल

शिक्षकों को अपने भाषा शिक्षण के उद्देश्यों और उनके सीखने के चरण या कक्षा में सीखने के प्रतिफलों को समझने की आवश्यकता है ताकि उनकी कक्षा की प्रक्रियाओं के लिए प्रभावी ढंग से योजना बनायी जा सके। इससे विद्यार्थी को उसके संदर्भों, भाषा कौशल की आवश्यकताओं, पाठ के प्रकारों और भाषा पाठ की योजना बनाने के लिए अध्यापक से अपेक्षित प्रक्रियाओं को समझने में मदद मिलती है। शिक्षकों को तदनुसार अपनी कक्षा प्रक्रिया की योजना बनाने की आवश्यकता होती है।

सभी राज्यों/संघशासित प्रदेशों के लिए सीखने के प्रतिफलों का कार्यान्वयन अनिवार्य है। सीखने के प्रतिफल भाषा शिक्षण-अधिगम के अतिव्यापी उद्देश्यों, कौशलों और दक्षताओं के साथ संरेखित होते हैं, जिनको बढ़ावा दिया जाना चाहिए। आप *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* द्वारा उल्लिखित उद्देश्यों में कौशलों और इसके अनुवर्त के रूप में विकसित पाठ्यक्रम को संदर्भित कर सकते हैं। सीखने के प्रतिफल, इसके उद्देश्यों को योग्यता आधारित शिक्षण में बदल देते हैं। आप www.ncert.nic.in पर उपलब्ध सीखने के प्रतिफलों के दस्तावेज़ को देख सकते हैं।

आइए, अब कक्षा में नियोजन और प्रक्रियाओं के लिए एक पाठ या पाठ का हिस्सा लें। यहाँ अँग्रेज़ी की कक्षा-छह की पाठ्यपुस्तक *हनीसकल* का पहला पाठ है, "हू डिड पैट्रिक्स होमवर्क?"

1	पढ़ने से पहले	• बच्चे गृह-कार्य (होमवर्क) करने के बारे में जोड़े-समूहों में अपनी पसंद और नापसंद के बारे में चर्चा करते हैं और इसे पूरी कक्षा के साथ साझा करते हैं। • अध्यापक गृह-कार्य पर पाठ्यपुस्तक, एन.आर.ओ.ई.आर. या किसी अन्य स्रोत के क्यू.आर. कोड से पहले से एक ऑडियो पाठ या क्लिप चला सकते हैं।
2.	पढ़ते समय	• अध्यापक उचित उच्चारण के साथ एक मॉडल पाठ ऊँची आवाज़ में पढ़ सकते हैं। • कक्षा को जोड़े या चार के समहों में विभाजित किया जा सकता है और बारी-बारी से पढ़ा जा सकता है। अध्यापक बच्चों को समझने के साथ पाठ को 'डिकोड' करने की सुविधा देता है। जब बच्चे शब्दों के उच्चारण और शब्दों का अर्थ पछू ते हैं, तो अध्यापक उन्हें पढ़ने में सहायता करते हैं। इसके अलावा, वे शब्दकोश का उपयोग करने, संदर्भ में अर्थ खोजने आदि सीखने के लिए कार्यनीति भी प्रदान कर सकते हैं। • अध्यापक यह जानने के लिए कि क्या वे पाठ को समझ चके हैं, प्रत्येक हिस्से को पढ़ने के बाद प्रश्न पूछ सकते हैं।
3.	पढ़ने के बाद पढ़ने की समझ	• समूहों या जोड़े में, बच्चों को पाठ्यपुस्तक से पढ़ने के बाद प्रश्नों के लिए निर्देशित किया जाता है। यह पहले समूहों में मौखिक रूप से किया जाता है, क्योंकि अध्यापक प्रश्न पूछता है और फिर बच्चों को अलग-अलग रूप से लिखने के लिए कहा जा सकता है। • अध्यापक पाठ से आगे बढ़ते हुए कुछ और प्रश्न भी पूछते हैं।

© NCERT not to be republished

3 (क)	भाषा के साथ काम करना	● यह पढ़ने और पाठ्य सामग्री की भाषा के मदों के आधार पर शब्दावली/व्याकरणिक गतिविधि है। ● बच्चों को अब रिक्त स्थान को भरने के लिए शब्द खोजने के लिए कहा जाता है। वे पाठ पर वापस जा सकते हैं और फिर से पढ़ सकते हैं।
3 (ख)	सुनना और बोलना	● अध्यापक अब बच्चों से एन.आर.ओ.ई.आर. ई-पाठशाला से कोई कहानी सुनने के लिए कह सकते हैं और कुछ प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं या निम्न में से कोई भी गतिविधि कर सकते हैं। ▪ कहानी को फिर से संक्षेप में सुनाएँ या कहानी के सारांश को बताएँ। ▪ किसी अन्य भाषा/बच्चों की मातृभाषा में कहानी सुनाएँ।
3 (ग)	बोलना	● तीन या चार के समूह में सबसे पहले बच्चे विचारों को इकट्ठा करने के लिए विचार मंथन की गतिविधि करते हैं और बोलने के दौरान इसे कैसे कहना है, इसके बारे में चर्चा करते हैं। ● इसके बाद वे बोलते हैं कि वे अपने गृह-कार्य के बारे में कैसा महसूस करते हैं।
3 (घ)	लिखना	● बच्चे अब गृह-कार्य के बारे में अपनी भावना लिखते हैं। अध्यापक उन्हें बताएँगे कि विचारों को कैसे इकट्ठा किया जाए, उन्हें कैसे लिखें, पहला मसौदा लिखें और लेख को संपादित करें और फिर अंतिम रूप दें। बच्चे इसे समूह-कार्य और फिर गृह-कार्य के रूप में करते हैं।

के.आर.पी. के लिए गतिविधि

- किसी विशेष कक्षा के सीखने के प्रतिफल का संदर्भ लें और अपने साथी/सहकर्मी के साथ निम्नलिखित पर चर्चा करें—
  - किसी भी सीखने के प्रतिफल को प्राप्त करने के लिए आवश्यक शैक्षणिक प्रक्रियाओं का एक उदाहरण दें।
  - पढ़ने या किसी अन्य कौशल या योग्यता के लिए एक गतिविधि कार्य के बारे में सोचें जो आप अपनी कक्षा में उपयोग कर रहे हैं।
- क्या आपको लगता है कि विद्यालय और घर में बच्चों को गृह-कार्य और अन्य अतिरिक्त काम के नाम पर बोझ डाला जाता है? आप भाषा सीखने को कैसे आनंदायक बनाएँगे?
- किसी भी पाठ का चयन करें और पठन से पहले योजना बनाएँ। पढ़ते समय, पढ़ने के बाद, शब्दावली, व्याकरण, लेखन और जेंडर संवेदनशीलता, समावेशन, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता जैसे मुद्दों पर ध्यान दें।

कौशल विशिष्ट कार्य

आइए, अब देखें कि प्रत्येक भाषा कौशल— सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना और भाषा के अन्य पक्षों, जैसे— शब्दावली और व्याकरण, को कक्षा में कैसे सिखाया जा सकता है।

सुनना और बोलना

'हू डिड पैट्रिक्स होमवर्क?' पाठ के आधार पर सुनना और बोलना (*हनीसकल*, कक्षा-छह के लिए अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तक)

शैक्षणिक प्रक्रियाएं	सीखने के प्रतिफल
बच्चे— ● सुनने की समझ विकसित करने के लिए एक संसाधन के रूप में अंग्रेज़ी समाचार (टीवी, रेडियो) को सुनें।	बच्चे— ● अंग्रेज़ी में गतिविधियों, जैसे— भूमिका निभाना, समूह चर्चा, वाद-विवाद आदि में भाग लेना।

• उप-शीर्षक के साथ अंग्रेजी फ़िल्में, धारावाहिक, शैक्षिक चैनल देखना/सुनना, श्रव्य-दृश्य सामग्री, आवाज़ वाली (टॉकिंग) किताबें, अध्यापक द्वारा सामग्री से पढ़ना, और समझना एवं जवाब देना।	• कविताएँ, गीत, चुटकुले, पहेलियाँ, टंग ट्विस्टर आदि सुनाना और साझा करना।
• व्यक्तिगत बातचीत में भाग लेना। अपना और अन्य व्यक्तियों का परिचय; भूमिका निभाने में भाग लेना/भाषण देना, महान वक्ताओं के भाषणों को पुनः पेश करना।	• मौखिक संदेश, अंग्रेज़ी में टेलीफ़ोनिक संचार का जवाब देना और उन्हें अंग्रेज़ी या मातृभाषा में संप्रेषित करना।
	• कक्षा, विद्यालय की प्रार्थना सभा, रेलवे स्टेशन और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर की गई घोषणाओं और निर्देशों का जवाब देना।

श्रवण कार्य

समूह श्रुतलेख

बच्चों को तीन या चार के समूह में बाँटा गया है अध्यापक/अध्यापिका पाठ 'हू डिड पैट्रिक्स होमवर्क?' से एक अंश पढ़ते हैं और उसे ध्यान से सुनने के लिए स्पष्ट रूप से निर्देश देते हैं। उसके बाद, वह बच्चों को याद करने और बिंदुओं को नोट करने के लिए कहते हैं जो उन्होंने अब तक पढ़ा है। वह उन्हें पाँच मिनट याद करने और लिखने की अनुमति देते हैं। एक बार जब बच्चे ऐसा कर लेते हैं, तो वह उन्हें फिर से पाठ सुनने के लिए कहते हैं। बच्चों का लेखन मूल पाठ के करीब हो सकता है।

पैट्रिक ने कभी भी होमवर्क (गृह-कार्य) नहीं किया, वह इसे "बहुत उबाऊ" कहता है। उसने इसके बजाय हॉकी और बॉस्केटबॉल और निन्टेंडो खेला। उसके अध्यापक ने उससे कहा, "पैट्रिक! डू यू होमवर्क ऑर यू डू नॉट लर्न ए थिंग" और यह सच है; कभी-कभी वह अज्ञानियों की तरह महसूस करता था। लेकिन क्या करता? उसे गृह-कार्य करना पसंद नहीं था।

हमने श्रुतलेख (डिक्टेशन) गतिविधि का एक उदाहरण दिया है। लेकिन विद्यार्थियों की उम्र और रुचि के आधार पर श्रुतलेख को कई तरीकों से किया जा सकता है।

बोलने की गतिविधि

रोल प्ले

अध्यापक माता-पिता और शिक्षकों के दृष्टिकोण से गृह-कार्य को देखने का अवसर प्रदान करता है। वह तीन विद्यार्थियों को लेकर समूह बनाते हैं और सभी विद्यार्थियों को अभिनय करने की भूमिकाओं की फ़ोटोकॉपी देते हैं।

भूमिकाएँ

अभिभावक 1— गृह-कार्य करना बहुत ज़रूरी है, बच्चों को प्रतिदिन गृह-कार्य करना चाहिए।

अभिभावक 2— हाँ! मैं यह मानता हूँ कि गृह-कार्य आवश्यक है, लेकिन बहुत अधिक नहीं। बच्चों के खेलने के लिए कुछ समय होना चाहिए।

अध्यापक— गृह-कार्य, विद्यार्थियों को अपना पाठ याद करने और दोहराने के लिए तैयार करता है। यह विषय को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है और उनकी लेखन क्षमता (राइटिंग) को बेहतर बनाता है।

© NCERT not to be republished

के.आर.पी. के लिए गतिविधि

- सुनने के कौशल संबंधी कार्य अनुच्छेद का श्रुतलेख हो सकता है। अध्यापक ने एक अनुच्छेद पढ़ा और बच्चों ने इसे सुना और फिर उनके सुनने के आधार पर इसे फिर से लिखने का प्रयास किया। आपको क्या लगता है कि इस तरह की गतिविधियाँ कक्षा में सुनने को बढ़ावा देने में मदद करती हैं?
- बच्चों को किसी भी कार्य या गतिविधि में समूहों में बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करना क्यों महत्वपूर्ण है?

पढ़ना

पढ़ना एक संवादात्मक प्रक्रिया है जो पाठक और पाठ के बीच चलती है, जिसके परिणामस्वरूप पाठ को समझा जाता है। पाठ में अक्षर, शब्द, वाक्य और अनुच्छेद प्रस्तुत किए जाते हैं जो अर्थ को 'एनकोड' करते हैं। पढ़ना केवल 'डिकोडिंग नहीं है, यह अर्थ बनाने का प्रयास है। पाठक इस बात का निर्धारण करने के लिए ज्ञान, कौशल और कार्यनीतियों का उपयोग करता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि पढ़ना एक संवादात्मक और रचनात्मक प्रक्रिया है। पाठकों और पाठ के बीच की बातचीत पाठकों को उनके अर्जित ज्ञान और अनुभवों के अनुसार उनके अर्थ का निर्माण करने की सुविधा देती है। जैसे-जैसे व्यक्ति बड़े होते हैं और अपने परिवेश के संपर्क में आते हैं, वे विश्व दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं। इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी की एक विशेष पाठ के साथ अंतःक्रिया अलग-अलग होती है और प्रत्येक विद्यार्थी अपने पिछले ज्ञान के अनुसार अर्थों का निर्माण करता है।

पढ़ते समय अंतर्निर्मित आकलन का परिप्रेक्ष्य

आप विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछकर, जैसे कि सही गलत, मिलान, बहुविकल्पीय प्रश्न, लघु उत्तरीय प्रश्न, रिक्त स्थान भरना, पूर्ण करने के प्रकार, शब्द से जुड़े प्रश्न, तालिका पूर्ण करने के प्रकार आदि के बारे में पूछकर विद्यार्थियों के पढ़ने का आकलन कर सकते हैं। आप इनका आकलन सूचनाओं, मुख्य विचारों की पहचान करने, पाठ की व्याख्या करने और निष्कर्ष निकालने से कर सकते हैं।

परीक्षा के अच्छे मदों और प्रश्नों को डिज़ाइन करना एक कला है और शिक्षकों को इस तरह के

शैक्षणिक प्रक्रियाएँ	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थी को जोड़े/समूहों/व्यक्तिगत रूप से अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है— • गद्य, कविता, नाटकों को समझने और उनकी प्रशंसा के लिए और उत्तर लिखने के लिए विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्री को पढ़ें। • उनके पढ़ने पर आधारित प्रश्न उठाएँ। • आलोचनात्मक विचारों के लिए पाठ के विचारों को पढ़ें/चर्चा करें।	बच्चे— • अंग्रेजी में विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्री को पढ़ने में सक्षम होगा। मुख्य विषय, पात्रों, विचारों और घटनाओं के अनुक्रम की पहचान कर सकेगा और उसके साथ व्यक्तिगत अनुभवों का संबंध बना सकेगा। • नोटिस बोर्ड, समाचार-पत्र, इंटरनेट, टेबल, चार्ट, आरेख और नक्शे आदि से जानकारी लेने के लिए पढ़ता है। • मौखिक और लिखित रूप में परिचित और अपरिचित पाठ्य सामग्री पर विभिन्न सवालों के जवाब देता है।

सवालों के बारे में सोचने और उसे तैयार करने में समय लगाना चाहिए।

के.आर.पी. के लिए गतिविधि

विद्यार्थियों को समझने के साथ पढ़ना मुश्किल क्यों लगता है? कारणों की सूची बनाएँ और संभावित कार्यनीतियों का सुझाव दें।

लिखना

लेखन हमें विचारों को व्यक्त करने और पाठकों तक अपने विचारों को पहुँचाने में मदद करता है। लेखन कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो पहली बार कागज़ पर लिखने से शुरू और इसी पर समाप्त होती है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें नियोजन, प्रारूपण, संशोधन, संपादन और पुनर्लेखन शामिल हैं। हमारे विद्यार्थियों के लेखन कौशल को बेहतर बनाने के लिए हमें लेखन की प्रक्रिया को समझना होगा। लिखने का उद्देश्य विचारों की अभिव्यक्ति है, एक पाठक तक संदेश पहुँचाना है। लिखित भाषा बोली जाने वाली भाषा से अलग है और इसलिए लेखक को कुछ औपचारिक पहलुओं, जैसे— साफ़-सुथरी लिखावट, सही वर्तनी और विराम चिह्न, उपयुक्त व्याकरण और शब्दावली के सावधानीपूर्वक चयन को भी ध्यान में रखना होगा।

शैक्षणिक प्रक्रियाएँ	सीखने के प्रतिफल
विद्यार्थियों को जोड़े/समूहों व्यक्तिगत रूप से अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है- • विभिन्न प्रकार के लेखन, जैसे— संदेश, नोटिस, लिखें, पत्र, रिपोर्ट, जीवनी, डायरी प्रविष्टि, यात्रा वृत्तांत आदि के संदर्भ को समझें। • अंग्रेजी/ब्रेल में विराम चिह्नों और उचित शुरुआत, मध्य और अंत के साथ लिखने, मसौदा तैयार करने और सुधार करने पर ध्यान केंद्रित करें। • एक पुस्तक समीक्षा लिखें।	बच्चे— • मौखिक, प्रिंट और दृश्य संकेतों के आधार पर छोटे अनुच्छेदों का मसौदा लिखें, संशोधित करें और लिखें। • अँग्रेज़ी/ब्रेल में उचित शुरुआत, मध्य और अंत पर ध्यान केंद्रित करते हुए सुसंगत रूप से लिखें। • संदेश, निमंत्रण, लघु अनुच्छेद और पत्र (औपचारिक और अनौपचारिक) और दर्शकों की भावना को ध्यान में रखकर लिखें। • एक पुस्तक समीक्षा लिखें।

आइए, अब देखें कि कक्षा की स्थिति में लेखन कार्य/गतिविधि को किस तरह से किया जा सकता है।

लेखन/विचार मंथन से पहले	इस चरण में विचार-विमर्श और विचारों को विचार या दृश्य के माध्यम से उत्पन्न करना शामिल है। इसमें लेखन के उद्देश्य के बारे में सोचना भी शामिल होगा। उदाहरण के लिए, निमंत्रण पत्र, एक मित्र को लिखे गए पत्र की तुलना में अधिक औपचारिक होगा।
लिखना	इस चरण में जानकारी का आयोजन करना, उपयुक्त भाषा का चयन करना और निश्चित रूप से स्वयं लेखन का कार्य शामिल है। संशोधन करना भी इस प्रक्रिया का एक हिस्सा है, क्योंकि लेखक इसे चुन सकता है कि वह रुककर इस बात पर विचार करे कि उन्होंने लिखना बंद करने से पहले क्या लिखा है।

पुनरीक्षण और समीक्षा	इस प्रक्रिया में पुनः पढ़ना और समीक्षा करना शामिल है। ● क्या मुझे अपने वाक्यों को फिर से व्यवस्थित करने की आवश्यकता है? ● क्या मैं एक बिंदु लिखना चूक गया हूँ? ● क्या इसमें दोहराव है? ● क्या मैं बेहतर शब्दावली या नए उदाहरणों के साथ एक बिंदु प्रस्तुत कर सकता हूँ? आदि।
संपादन	यहाँ लेखक यह सुनिश्चित करता है कि लिखित पाठ सही है और वह इसमें विराम चिह्नों, वर्तनी और व्याकरण इत्यादि की भी जाँच करता है। इस स्तर पर सावधानीपूर्वक अंतिम संशोधन भी किया जाता है।
पुनर्लेखन	अंतिम मसौदा लिखना

अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को अनुरोध करते हुए एक औपचारिक पत्र लिखिए कि वे आपके लिए अतिरिक्त संगीत कक्षाओं की व्यवस्था करें।

आप शब्दावली पर लेखन, विचार की प्रस्तुति, सुसंगतता, व्याकरण और विराम चिह्न का आकलन कर सकते हैं।

आकलन के लिए जिस प्रकार के प्रश्न निर्धारित किए गए हैं, उनके लिए पुस्तक में दिए गए विवरण से परे जाने की आवश्यकता है। लेखन कार्यों को रचनात्मक और खुले तौर पर समाप्त करने की आवश्यकता है, ताकि विद्यार्थी अपने संदर्भ से लिख सकें और उदाहरणों के साथ लेखन को समृद्ध बना सकें।

के.आर.पी. के लिए गतिविधि

एक ऐसी गतिविधि का विकास करना, जिसमें जेंडर संवेदनशीलता/समावेश/पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता/वैज्ञानिक स्वभाव को बढ़ाने के लिए प्रकरण विशिष्ट विषय के साथ एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

विषय 'बालिका को शिक्षित किया जाए' पर एक अनुच्छेद लिखें।

विविध/रचनात्मक प्रश्न

विविध प्रश्न बच्चों को अलग-अलग रास्ते तलाशने और कई अलग-अलग बदलाव और वैकल्पिक उत्तर या परिदृश्य बनाने की सुविधा देते हैं। विविध प्रश्न एक विशिष्ट उत्तर वाले प्रश्न ही नहीं है, बल्कि इसमें एक निश्चित विषय के बारे में मोटे तौर पर सोचने की क्षमता भी है। इस तरह के सवालों में जेनेरिक चिंताओं को भी संबोधित किया जाता है, जैसे कि विशेष आवश्यकताएँ, जेंडर आदि। पाठ्यपुस्तकों में व्यापक प्रश्न और अनुपूरक पुस्तकों में व्यापक पाठ्य सामग्री का बच्चों में भिन्न प्रकार की सोच विकसित करने के लिए अच्छा उपयोग किया जा सकता है।

सीखने के प्रतिफल दस्तावेज़ से विशेष आवश्यकताओं (सी.डब्ल्यू.एस.एन.) वाले बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निम्नलिखित निर्देशों को उपयोग किया जा सकता है।

क्र.सं.	इसके लिए बना है	अपनाई जाने वाली कार्यनीति के सुझाव
1.	अल्प दृष्टि वाले बच्चे	अल्प दृष्टि वाले बच्चों के लाभ के लिए— • रंगीन चॉक, स्केच पेन आदि का उपयोग किया जा सकता है। • बड़े लेखन वाले ब्लैकबोर्ड पर काम करने में मदद मिलेगी। • बैठने की व्यवस्था उचित पंक्ति में और अधिक रोशनी के लिए खिड़की के पास होनी चाहिए।
2.	श्रवणबाधित बच्चे	• ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि वे अध्यापक के पास बैठ सकें। • अध्यापक को ज़ोर से, स्पष्ट रूप से और ठहराव के साथ बोलना चाहिए। • ज़रूरत पड़ने पर अध्यापक को दोहराना चाहिए।
3.	संज्ञानात्मक विकार और बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चे	ऐसे बच्चों को मौखिक भाषा (प्रवाह) में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है— पढ़ने (शब्दों को छोड़ना); आँखों के समन्वय (अस्पष्ट लिखावट) और आलंकारिक भाषा को समझने में/इसके लिए अध्यापक अपनी रचनात्मकता और धैर्य के माध्यम से उपयुक्त कार्यनीति तैयार कर सकते हैं। वे सहयोगियों से परामर्श कर सकते हैं और डी.ई.जी.एस.एन., एन.सी.ई.आर.टी. से भी सलाह ले सकते हैं।
4.	उच्च उपलब्धि हासिल करने वाले	इस तरह के बच्चों को अलग-अलग विचार की ओर ले जाने वाली गतिविधियाँ प्रदान की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, ये बच्चे पाठ्यपुस्तक के 'लेट्स लिसन एंड टॉक' (आओ, सुनें और बात करें) और से अलाउड' सेक्शन (ऊँची आवाज़ में पढ़ें) में बहुत ही काल्पनिक रूप से प्रतिक्रिया दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें नयी शब्दावली के साथ थोड़े चुनौतीपूर्ण संज्ञानात्मक स्तर वाली विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्री प्रदान की जा सकती है।

शब्दावली

शब्दों का अभिग्रहण भाषा सीखने के क्षेत्र में एक प्रारंभिक एवं आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। शब्दावली व्यापक (शब्दों की संख्या) और गहन (एक शब्द के कई अर्थ) हो सकती हैं। शब्दावली की व्यापकता सीधे पढ़ने की समझ से जुड़ी हुई है। बच्चों को नए शब्दों की परिभाषा देना उनकी समझ में सुधार लाने के लिए पर्याप्त नहीं है। बच्चों के मस्तिष्क में मौजूद परिभाषा को बरकरार नहीं रखा जा सकता है और जब वे भविष्य में पढ़ने के दौरान इन्हीं शब्दों का सामना करते हैं तो वे इन्हें समझ नहीं पाएँगे। हालाँकि, यदि बच्चों को संगत जानकारी प्रदान की जाती है, जो एक नए शब्द की परिभाषा की ओर ले जाती है तो समझ का स्तर काफ़ी बढ़ जाएगा। नीचे कुछ कार्यनीतियाँ दी गई हैं—

- पाँच-सात वाक्यों में इस शब्द का उपयोग करने से इसका अर्थ स्पष्ट हो जाता है।
- वाक्य को फिर से पढ़ना और संदर्भ/स्थिति को प्रतिबिंबित करना।
- अनुमान लगाने की सुविधा के लिए संकेत प्रदान करना।

फिर, बच्चे अपने आप परिभाषा तय करेंगे। छोटे बच्चों के लिए, शब्द पर अभिनय करना या उसकी तस्वीर खींचने से ध्वनियों को शब्दों के साथ जोड़ने में मदद मिलेगी और शब्दों के साथ चित्रों और शब्द को इसके अर्थ के साथ जोड़ा जा सकेगा। हम इस गतिविधि के माध्यम से एक शब्दावली गतिविधि के साथ-साथ सीखने के प्रतिफल भी प्राप्त करते हैं।

- स्वयं करने की गतिविधि (जैसे— ड्रॉइंग करना/वीडियो बनाना/देखना/वास्तविक या कलाकृतियों का प्रबंधन);
- शब्द और इसके अन्य अर्थों पर चर्चा;
- शब्द को संदर्भ में पढ़ने के कई अवसर;
- अलग से नहीं, बल्कि वाक्यांशों और वाक्यों में व्याकरण सम्मत शब्द लिखना।

सीखने के प्रतिफल, कक्षा 4—शब्दावली

शैक्षणिक प्रक्रियाएँ	सीखने के प्रतिफल
बच्चे— ● श्रेणियों और शब्दमाला पर ध्यान दें। ● मुख्य रूप से अंग्रेज़ी के संदर्भ के माध्यम से शब्दावली समृद्ध बनाएँ। ● वर्तनी और अर्थ का पता लगाने के लिए शब्दकोश का उपयोग करना शुरू करें। ● संदर्भ से अपरिचित शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाएँ ● ज्ञात और अज्ञात पाठ्य सामग्री से शब्दों/वाक्यांशों/वाक्यों/छोटे अनुच्छेद का 'डिक्टेशन' लें।	बच्चे— ● सरल क्रॉसवर्ड पहेली को हल करें, शब्दमाला आदि का निर्माण करें। ● अपरिचित शब्दों के अर्थ को संदर्भ में पढ़कर समझें। ● छोटे अनुच्छेद (7–8 वाक्य) का 'डिक्टेशन' लिखें या टाइप करें। ● वर्तनी और अर्थ का पता लगाने के लिए शब्दकोश का उपयोग करें।

आदर्श 4

निम्नलिखित शब्दों को, कागज़ के विभिन्न टुकड़ों पर लिखें।

मून/चाँद	ब्रेक
फॉल/गिरना	लाइट
रेन/बारिश	पानी
तीव्र	धनुष

बच्चों से दो शब्दों को मिलाकर एक नया शब्द बनाने को कहें। निम्नलिखित कार्यनीतियों के माध्यम से नयी शब्दावली को तैयार किया जा सकता है—

व्याकरण

'व्याकरण' शब्द बोलें, और आपको आमतौर पर, 'मुश्किल', 'उबाऊ', 'चिढ़', और इसी तरह की प्रतिक्रियाएँ मिलेंगी। कुछ लोगों को यह भी गलत धारणा है कि अगर किसी भाषा की कोई लिपि नहीं है, तो उसका कोई व्याकरण भी नहीं है। व्याकरण हर भाषा में अंतर्निहित होता है। व्याकरण को इस संदर्भ में सबसे अच्छी तरह पढ़ाया जाता है। मातृभाषा में, हम व्याकरणिक रूप से सही वाक्यों का निर्माण करते हैं। यहाँ तक कि जब हम गलती करते हैं तो उन्हें अन्य वक्ताओं द्वारा किसी तनाव के बिना पूरी तरह से ठीक

किया जाता है या भाषा पर काम करते हुए हम स्वयं को भी सही करते हैं। समझ बढ़ाने की कुंजी तथ्यों और नियमों के लिए एक संदर्भ प्रदान करना है। यह व्याकरण नियमों जैसी अमूर्त अवधारणाओं के लिए विशेष रूप से सत्य है।

आदर्श 5

उदाहरण के लिए, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष भाषण शिक्षण के लिए, रिपोर्टिंग की अवधारणा कुछ ऐसी है जिससे सभी बच्चे परिचित होंगे। फिर भी, वे अक्सर उदाहरणों को हल करने के लिए संघर्ष करते हैं, क्योंकि वे 'नियमों के माध्यम से सोचते हैं।' एक बेहतर तरीका यह होगा कि आप इस गतिविधि को निम्नलिखित तरीके से सिखा सकते हैं-

तीन बच्चों को बुलाएँ और उन्हें कक्षा के सामने बैठाएँ। दो बच्चे एक तरफ बैठते हैं, तीसरा उनसे अलग बैठता है।

छात्र 1 — क्या आपने अपनी साइकिल बेची है?

छात्र 2 — मैं अभी भी इसके बारे में सोच रहा हूँ।

(छात्र 1 आगे छात्र 3 के पास जाता है)

छात्र 1 (छात्र 3 से)— मैंने उससे पूछा कि क्या उसने अपनी साइकिल बेची है, उसने कहा कि वह अभी भी इसके बारे में सोच रहा है।

निम्नलिखित कार्यनीतियों के माध्यम से अध्यापक द्वारा त्रुटियों को कम किया जा सकता है—

- विभिन्न लघु पाठों के माध्यम से अवधारणा का अभ्यास प्रदान करना;
- बच्चों को विचार करने के लिए प्रोत्साहित करना;
- बच्चों से पूछना, "क्या यह सही लगता है?"

नयी व्याकरण अवधारणा को निम्नलिखित कार्यनीतियों के माध्यम से आगे बढ़ाया जा सकता है—

- अवधारणा के विभिन्न व्याकरणिक पैटर्न का उपयोग करते हुए, सहयोग-समृद्ध वातावरण प्रदान करना;
- बच्चों के परिवेश से संबंधित उच्च आवृत्तिवाली वस्तुओं के साथ पाठ्य सामग्री का चयन करना।

अर्थपूर्ण संदर्भ में व्याकरण पढ़ाना एक सार्थक रूपरेखा प्रदान करता है जो वास्तविकता से जुड़ा है और इस प्रकार यह समझ की सुविधा देता है।

सीखने के प्रतिफल - कक्षा 7 व्याकरण

शैक्षणिक प्रक्रियाएँ	सीखने के प्रतिफल
बच्चे— • संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया निर्धारक, समय और काल, कर्मवाच्य, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि पर केंद्रित विभिन्न स्थितियों और संदर्भों के माध्यम से व्याकरण के नियमों को समझें।	बच्चे— • संचार में उचित व्याकरणिक रूपों का उपयोग करता है (जैसे— संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, निर्धारक, समय और काल, कर्मवाच्य, विशेषण, क्रिया विशेषण)। • मौखिक और दृश्य संकेतों की मदद से और दर्शकों की भावना के साथ अंग्रेज़ी/ब्रेल में सुसंगत रूप से वाक्यों को व्यवस्थित करता है।

© NCERT not to be republished

आदर्श 6

पाठ का नाम— 'बहादुर बित्तो'

हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम 3* से

कक्षा तीन में एक पंजाबी लोककथा है— बहादुर बित्तो'। यह कहानी बित्तो नाम की महिला की चतुराई, सूझ-बूझ, निडरता को दर्शाती है कि किस तरह से चुनौतियों का सामना और बचाव किया जाता है। 'कहानी' विधा का यह पाठ बच्चों की भाषायी क्षमताओं के विकास, भाषायी रंगतों तथा बारीकियों की समझ व विभिन्न संदर्भों में भाषा प्रयोग और सामाजिक सरोकारों के प्रति संवेदनशीलता से जुड़ी अनेक संभावनाओं को समेटे हुए है। दरअसल कहानी कहने के लिए होती है और कहानी कहना एक कला है। कहानी कहने वाले का अंदाज़, हाव-भाव और उतार-चढ़ाव इतना सधा हुआ हो कि बच्चे कहानी के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकें, कहानी की घटनाओं को अपने आस-पास घटते हुए महसूस कर सकें और कहानी के साथ स्वयं को जोड़ सकें।

चिंतन-बिंदु

- अब तक आपने जो कहानियाँ पढ़ीं व सुनीं, उनमें आपको क्या खास बातें नज़र आई ?
- कहानी किस तरह से भाषायी रंगतों और सामाजिक सरोकारों को समाहित किए हुए होती है?

आइए, चलते हैं मीता की कक्षा में। मीता कक्षा तीन की अध्यापिका है और आज वे बच्चों के साथ 'बहादुर बित्तो' कहानी पर बात करने जा रही हैं।

कक्षा की शुरुआत

मीता ने कक्षा में आते ही रोज़ की तरह सभी बच्चों से उनके बारे में बातचीत का सिलसिला शुरू किया। यह बेहद अनौपचारिक बातचीत थी— *मोहित का बुखार कैसा है? दवाई ली क्या?/ रेशमा ने कल विद्यालय से घर जाकर क्या किया?/ बच्चों ने कौन-कौन सी किताबें पढ़ ली हैं?/ आज कुछ और किताबें हमारे कक्षा पुस्तकालय में शामिल हो जाएँगी। किसी को छुट्टी के समय कोई पेंसिल मिली क्या? रेहाना की पेंसिल नहीं मिल रही है,* आदि। बच्चों ने भी अपनी-अपनी बात कही— बुखार अब ठीक है। *दवाई चल रही है।/ हमने किताब धूप में रखी थी। बारिश में गीली हो गयी थी सारी की सारी!/ आज कौन-सी किताबें आई हैं? कोई कहानी की किताब है उसमें क्या?/ हाँ मैडम, ये रही वहाँ दरवाज़े के पीछे पड़ी थी,* आदि-आदि। बच्चे अपनी और भी बातें बताने लगे— *चूहे ने कपड़े कुतर डाले/छोटे भाई ने बस्ते में से किताब निकाल ली,* आदि। नंदिनी ने भी अपनी बात कही और इस अंदाज में कही कि सबका ध्यान उसकी ओर चला गया— *पता है, मैंने कल रास्ते में बहुत लंबा साँप देखा! मीता और कक्षा के सारे बच्चे उत्सुक थे कि फिर क्या हुआ। सब साँप के बारे में बात करने लगे— क्या तुम साँप से डर गयी थीं? साँप अपने आप चला गया था या तुमने उसे भगा दिया था?/ साँप भगाने में क्या किसी ने तुम्हारी मदद की थी?* आदि-आदि। मीता ने ब्लैकबोर्ड पर नंदिनी की बात लिखी—

मैंने कल रास्ते में बहुत लंबा साँप देखा!

उन्होंने बच्चों से ब्लैकबोर्ड पर लिखे वाक्य को पढ़ने के लिए कहा। जो बच्चे पढ़ नहीं पा रहे थे, उनके पढ़ने में मीता ने मदद की और उँगली रखकर वाक्य को पढ़ा। फिर बच्चों से कहा कि अब वे वाक्य को पढ़े। बच्चों के साथ इस अनौपचारिक बातचीत को 'आज की बात' भी कहा जाता है। यह बच्चों को बोलने-सुनने और पढ़ने-लिखने के सार्थक अवसर देती है। साथ ही उन्हें कक्षा में सहज होने, अपनी बात कहने के अवसर और साहस देने, अपनी बात को अपनी भाषा में कहने की आज़ादी देने, बच्चों की भाषा को कक्षा में स्थान देने, दूसरों की बातों को धैर्य से सुनने, अपने अनुभवों को साझा करने, कक्षायी प्रक्रियाओं के साथ स्वयं को जोड़ने और संवाद की प्रक्रिया में सक्रिय सहभागी होने में भी मदद करती है। बच्चों को यह अवसर मिलता है कि वे अपनी बात को एक व्यवस्थित क्रम से कह सकें। बच्चों के साथ सवाद की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए ज़रूरी है कि शिक्षक भी बच्चों के साथ अपनी बात साझा करें।

भाषा सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

मीता ने देखा कि—

- कक्षा के सभी बच्चे नंदिनी को साँप मिलने वाली बात में ज़्यादा रुचि ले रहे थे। यह उनका रुचि क्षेत्र था।
- नंदिनी बहुत आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कह रही थी। उसके कहने के अंदाज़ में भावप्रवणता थी।
- मोहित बहुत धीमी आवाज़ में पूछी गयी बात का जवाब देता है। बात कहते समय उसकी नज़र झुकी रहती है।

झुनिया ने अपनी निमाड़ी भाषा में कहा— म्हार घर मे भी साँप घुसी आयो थो। मक साँप सी डर नी लगतो। (मेरे घर में भी साँप घुस आया था। मुझे साँप से डर नहीं लगता।) वह अपनी भाषा में तो आत्मविश्वास के साथ बहुत सलीके से बोलती है, लेकिन हिंदी में बोलने में उसके भीतर थोड़ी झिझक है।

कहानी कहना

मीता ने नंदिनी की बात से ही आगे की बात जोड़ते हुए कहा— "तुम्हें पता है कि एक बार बित्तो के सामने भी ऐसी ही चुनौती आई थी। लेकिन उनका मुकाबला साँप से नहीं बल्कि शेर से था। पता है, उन्होंने शेर का मुकाबला कैसे किया?" अब तक बच्चों के मन में यह उत्कंठा पैदा हो चुकी थी कि बित्तो कौन हैं और उन्होंने शेर का क्या किया? रोहित ने पूछा— "बित्तो कौन थी? शेर ने उनके साथ क्या किया?" तभी मुदिता की आवाज़ आई "हुँ। शेर ने बित्तो का कुछ नहीं किया बल्कि बित्तो ने शेर का कुछ किया! समझे रो ऽ ऽ ऽ हित!" आप बित्तो की कहानी सुनाइए न! कक्षा से सभी बच्चों की आवाज़ें आने लगीं। मीता ने 'बहादुर बित्तो' की कहानी पूरे भावपूर्ण ढंग से अपने अंदाज़ में सुनाना शुरू किया—

यह कहानी पंजाब की है। पंजाब के एक गाँव में एक किसान अपने परिवार के साथ रहता था। दो बच्चे— बबली और जीत! और उसकी बीवी का

नाम था— बित्तो!...! कहानी सुनाने के बाद मीता ने बच्चों से कहानी के बारे में चर्चा की—

- तुम्हें बित्तो की कौन-सी बात सबसे ज़्यादा पसंद आई और क्यों?
- शेर ने बित्तो को राक्षसी क्यों समझ लिया था?
- शेर तो डरकर भाग गया था, लेकिन भेड़िए का क्या हुआ होगा?
- अगर कहानी में शेर की जगह हाथी होता तो बित्तो कैसे निबटती?
- अगर तुम बित्तो की जगह होते तो शेर से कैसे निबटते?
- क्या कभी तुमने कोई तरकीब लगाकर समस्या को निबटाया है? कैसे?
- अगर बित्तो की यह कहानी तुम्हें अपनी दादी को सुनानी हो तो कैसे सुनाओगे? अपनी भाषा में कहानी सुनाइए।

मीता ने कहानी पर चर्चा करने के लिए ऐसे सवालों का चयन किया जो बच्चों को तर्क करने, अनुमान लगाने, कल्पना करने, अपने अनुभव से जोड़ने का अवसर देते हैं। यह ज़रूरी भी है! मीता के सवालों में वह गुंजाइश नज़र आती है कि बच्चे कहानी की घटनाओं और पात्रों के बारे में अपनी प्रतिक्रिया या राय दे सकें। बातचीत में सवालों का स्वरूप और दिशा तय करने में बच्चों के जवाब और प्रतिक्रियाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चों के जवाब से ही आगे के सवाल निकलते हैं। बच्चों के भाषा-विकास के संदर्भ में उन्हें यह एहसास कराना ज़रूरी है कि—

- उनके द्वारा कही गई बात का महत्व है।
- वे अपनी बात को अपनी भाषा में भी कह सकते हैं।
- शिक्षिका को उनका बोलना अच्छा लगता है।
- वे अपनी बात को अपने तरीके से कहने के लिए स्वतंत्र हैं।
- कक्षा के बाकी बच्चे भी उनकी बात को गौर से सुनते हैं।
- उनकी राय और प्रतिक्रिया बाकी बच्चों से अलग हो सकती है।
- ठीक ढंग से न बोलने पर उन्हें डाँटा नहीं जाएगा।
- उन्हें सभी सवालों के जवाब आते हों, यह जरूरी नहीं है।
- वे भी शिक्षिका से सवाल पूछ सकते हैं।

चिंतन-बिंदु

भाषा सीखने-सिखाने के संदर्भ में—

- अनौपचारिक बातचीत (आज की बात) और कहानी कहना-सुनना किन उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करते हैं?
- मीता की कक्षा में कौन-सी बातें आपको बहुत खास लगा और क्यों?

सवालों का स्वरूप क्यों महत्वपूर्ण है?

दरअसल बच्चों के साथ बातचीत करने और कहानी कहने-सुनने के माध्यम से बच्चों के सुनने-बोलने की क्षमताओं का विकास एक साथ हो रहा है। भाषायी क्षमताओं में परस्पर संबंध होता है और वे एक-दूसरे के विकास को प्रभावित करती हैं। भाषायी क्षमताओं को किसी एक सुनिश्चित क्रम से विकसित करना या उन्हें अलग-अलग खाँचों में रखना संभव

नहीं है। जब बच्चे दूसरे बच्चों या शिक्षिका की बातों को धैर्य से सुनते हैं तो वे विचार, विचारों की प्रस्तुति (शब्द-चयन, वाक्य संरचना, कहने का अंदाज़, उतार-चढ़ाव, गति आदि) को भी संज्ञान में लेते हैं। अच्छा श्रोता होना प्रभावी वक्ता बनने में मदद करता है। सुनना एक सक्रिय प्रक्रिया है जिसमें सुनते समय मस्तिष्क में निरंतर विचार-विमर्श चलता रहता है। मीता जब कहानी कह रही है तो बच्चे यह सोच सकते हैं— *शेर ने किसान को क्यों नहीं मारा?/ बित्तो भी कितनी चतुर है।/ मैं भी का मुकाबला ऐसे ही करती।/ शेर कितना मूर्ख था न!* आदि। बातचीत के दौरान बच्चों द्वारा पूछे गए सवाल उनकी इसी श्रवण क्षमता की ओर संकेत करते हैं कि बच्चे आखिर 'सुन' क्या रहे हैं और क्या अर्थ ले रहे हैं। कक्षा में अनेक बच्चे ऐसे हो सकते हैं जो लक्ष्य भाषा के इतर, अपनी मातृभाषा में बात करें, जैसे— असमी भाषा की कक्षा में कोई बच्चा, खासी या संथाली भाषा में बात कर सकता है। इसे सहर्ष स्वीकार कीजिए। ऐसा करना उन्हें लक्ष्य भाषा सीखने, लक्ष्य भाषा से जोड़ने में मदद करता है। बच्चों की अपनी मातृभाषा लक्ष्य भाषा के व्यवहार को प्रभावित कर सकती है, इसे भी स्वीकार कीजिए। मातृभाषा के प्रभाव या कक्षा में उसके स्थान को समाप्त करने का प्रयास बच्चों की अस्मिता को समाप्त करने जैसा हो सकता है, क्योंकि भाषा का सवाल अस्मिता का भी सवाल है।

कहानी का शीर्षक

किसी कहानी का शीर्षक उस कहानी के मुख्य भाव व मुख्य बात/मुख्य घटना की ओर संकेत करता है। मीता ने 'बहादुर बित्तो' कहानी के शीर्षक पर बच्चों के साथ बातचीत शुरू की और पूछा—

- इस कहानी को 'बहादुर बित्तो' नाम क्यों दिया गया होगा?
- अगर बहादुरी किसान ने दिखायी होती तो कहानी का क्या नाम होता?
- तुम कहानी को क्या नाम देना चाहोगे?

कहानी के नाम/शीर्षक के बारे में की गई बातचीत बच्चों को कहानी की मुख्य घटनाओं, पात्रों का विश्लेषण करने या उनके बारे में सोच-विचार करने का अवसर जुटाती है। कहानी को अपना शीर्षक देना बच्चों की तर्कशक्ति और कल्पनाशक्ति को बढ़ाने में मदद करता है। भाषा का सृजन तो है ही!

चिंतन-बिंदु

कहानी का शीर्षक किन-किन आधारों पर रखा जाता है और बच्चों में इसकी समझ विकसित करने के लिए आप कौन-कौन से तरीके सुझाएंगे?

बच्चों ने गढ़ी कहानी

अगर भेड़िए को बित्तो की असलियत मालूम नहीं होती तो—

- वह डर के मारे दुम दबाकर भाग जाता।
- वह शेर के साथ अपनी पूँछ नहीं बाँधता।

कहानी अलग-अलग अंदाज़ में

कहानी के इर्द-गिर्द कई तरह से काम करते हुए बच्चों के भाषा-विकास के अवसर जुटाए जा सकते हैं। किसी घटना को बदलकर कहानी को आगे बढ़ाना या कहानी का अंत बदलना भी ऐसी ही गतिविधि हैं। 'बहादुर बित्ती' कहानी के संदर्भ में भी स्थिति विशेष प्रस्तुत कर मीता ने बच्चों से कहानी को अपने-अपने

अंदाज़ में आगे बढ़ाने और कहानी का अंत बदलने के लिए कहा, जैसे—

- अगर किसान शेर को गाय देने का वादा न करता, तो?
- अगर भेड़िए को बित्तो की असलियत का मालूम नहीं होती, तो?
- अगर बित्तो शेर को देखकर डर जाती, तो?

कहानी में ऐसी और भी जगह या घटनाएँ हो सकती है जो नहीं होती तो, कहानी किसी अलग अंदाज़ में आगे बढ़ती या समाप्त होती। बच्चों से कहा जा सकता है कि वे कहानी की इन जगहों से कहानी को अपने हिसाब से आगे बढ़ाएँ या अंत बदलकर लिखें। उच्च कक्षाओं में एक गतिविधि यह हो सकती है कि कहानी की कोई एक-दो घटनाएँ बदल दी जाएँ लेकिन कहा जाए कि कहानी को कुछ इस तरह से गढ़ो कि उसका अंत वही रहे। कहानी का कोई एक पात्र बदलकर भी कहानी को नये सिरे से गढ़ने के लिए कहा जा सकता है। हम जितनी बार कहानी के इर्द-गिर्द बदलाव करेंगे, उतनी ही बार विचारों में, भाषा की संरचना व प्रयोग में भी बदलाव आएगा। इससे बच्चों को संदर्भ के अनुसार भाषा के विविध रूपों को गढ़ने या प्रयोग करने के सार्थक अवसर भी मिलेंगे।

भाषा सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

मीता ने देखा कि—

- जसबीर बहुत रुचि और धैर्य के साथ सबकी बात सुनती है।
- जेम्स के बोलने में स्पष्टता और प्रवाह है।
- राधिका बोलते समय थोड़ा अटकती है, लेकिन उसके जवाब बाकी बच्चों से अलग होते हैं।
- बबली ने अपना शीर्षक सुझाया— बितो की चतुराई भरी कहानी। कारण— बित्तो ने बहुत चतुराई से काम लिया न इसलिए!
- अली ने जल्दी से कहानी को आगे बढ़ाते हुए कहा— अगर बित्तो शेर को देखकर डर जाती तो शेर उसे खा जाता तो उसका पति उसे अस्पताल ले जाता। ऐसे ही कुछ दिन बीत जाते और उसके बाद उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती।

चिंतन-बिंदु

- बच्चों द्वारा अपनी कहानी गढ़ने के क्रम में कहानी को आगे बढ़ाना और कहानी का अंत बदलना, भाषा-विकास में किस तरह की मदद करते हैं?
- आप बच्चों की मौखिक भाषा का आकलन करते समय किन बातों पर ध्यान देंगे और क्यों ?

कहानी को अलग-अलग तरीके से आगे बढ़ाने का काम मौखिक भी हो सकता है और लिखित भी। मीता ने बच्चों से कहा— अगर कहानी में भेड़िए को बित्तो की असलियत मालूम न होती तो कहानी में आगे क्या होता/कहानी के अंत में क्या होता? कक्षा के सभी बच्चों ने अपनी-अपनी तरह से कहानी को आगे बढ़ाया और बताया। इसके बाद मीता ने कहा— ठीक है, अब तुम अपनी-अपनी कहानी को अपने-अपने तरीके से लिखो और कोई नाम (शीर्षक) भी दो। कक्षा तीन में यह संभव है कि बच्चे लेखन के अलग-अलग स्तर पर हो। कुछ बच्चे शब्दों को लिखने में तो कुछ वाक्य लिखने में संघर्ष कर रहे होंगे। कुछ बच्चों के पास अपनी बात तो हो, लेकिन कहने के तरीके (लिखित अभिव्यक्ति) में दिक्कत आ रही

not to be republished © NCERT

हो। एक खास तरह से वाक्य-संरचना को शुरू कर एक अलग तरह की वाक्य-संरचना से वाक्य की समाप्ति भी हो सकती है। विशिष्ट भाषा-प्रयोग के उदाहरण भी देखने को मिल सकते हैं। कुछ बच्चे अभी भी आड़ी-तिरछी रेखाओं, स्व-वर्तनी के स्तर पर होंगे। बच्चे जब लिखने की शुरुआत करते हैं तो कोई भी भाषा हो, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना भी लिखना होगा। यह भाषा शिक्षणशास्त्रीय दायरे के अंतर्गत आता है।

भाषा सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

मीता ने देखा कि—

- मुदिता ने कागज़ पर कहानी लिखना शुरू किया, लेकिन उसे जल्दी से मिटा भी दिया। फिर दुबारा लिखना शुरू किया।
- जावेद को 'भेड़िया' शब्द लिखना नहीं आया तो उसने किताब से 'भेड़िया' शब्द देखकर लिखा।
- मोहित धीरे-धीरे अक्षर बनाकर लिखने की कोशिश करता है।
- झुनिया ने निमाड़ी में ही कहानी लिखी। बोलने का आत्मविश्वास लिखने में भी झलक रहा था। आदित्य ने अपनी वर्तनी (स्व-वर्तनी) में लिखा— उसे बैल दे देता। फ़र्र खेत सूख जाता और उने भोजन नहीं मिल पाता।

चिंतन-बिंदु

बच्चों द्वारा अपनी कहानी गढ़ने के क्रम में कहानी को आगे बढ़ाना और कहानी का अंत बदलना भाषा-विकास में किस तरह से मदद करते हैं?

यहाँ भाषा क्षमताएँ— बोलना और लिखना साथ-साथ चल रही हैं। कहानी को आगे बढ़ाने के लिए मौखिक रूप से किया गया काम उसे लिखने में मदद करता है।

कहानी पढ़ना

पढ़ना एक अर्थपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें बच्चे पाठ्य-वस्तु से अपने लिए अर्थ का निर्माण करते हैं। एक ही पाठ्य-वस्तु अलग-अलग बच्चों के लिए अलग-अलग अर्थ दे सकती है। भाव के अनुसार पाठ्य-वस्तु को पढ़ना अर्थ तक पहुँचने में मदद करता है। मीता ने पहले 'बहादुर बित्तो कहानी के चित्रों पर बच्चों के साथ बातचीत शुरू की। इसके दो कारण हैं— पहला, बहादुर बच्चे 'बहादुर बित्तो' कहानी सुन चुके हैं और कहानी पर काफ़ी बातचीत भी हो गई है जो उन्हें पढ़ने में मदद करेगी। दूसरा, पढ़ते समय चित्र छपी हुई सामग्री के बारे में अनुमान लगाने में मदद करते हैं। चित्रों के सहारे बच्चे, छपी हुई कहानी को पढ़ने का प्रयास कर सकते हैं। मीता ने कहानी के अलग-अलग पृष्ठों पर छपे चित्रों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हुए बातचीत शुरू की—

- पहली तस्वीर में कहानी का कौन-सा हिस्सा है?
- बित्तो और किसान के बीच क्या बातचीत हो रही होगी?
- दूसरी तस्वीर में कहानी का कौन-सा हिस्सा है?
- बित्तो के हाथ में क्या है और क्यों?
- क्या शेर डरा हुआ लग रहा है?

मीता ने बच्चों को कहानी पढ़कर सुनाना शुरू किया— एक किसान था। उसकी बीवी का नाम था? 'बित्तो'। बच्चों का समवेत स्वर गूँजा 'अच्छा, यह बताओ कि कहानी में 'बित्तो' कहाँ लिखा हुआ है?'— मीता ने पूछा तो सब बच्चों ने 'बित्तो' शब्द पर उँगली रखकर बताया। वे अब तक 'बित्तो' शब्द से परिचित हो चुके थे। मीता ने आगे कहानी पढ़ना

© NCERT not to be republished

शुरू किया। बच्चों ने भी कहानी पढ़ी। पढ़ने के संदर्भ में कक्षा के बच्चे अलग-अलग स्तर पर हो सकते हैं। कुछ बच्चे अभी अक्षरों को जोड़-जोड़कर पढ़ने की कोशिश करेंगे तो कुछ धीमी गति से छपी हुई कहानी को पढ़ेंगे। कुछ अनुमान लगाते हुए पढ़ेंगे। मुदिता ने कहानी की एक पंक्ति 'बित्तो को एक तरकीब सूझी। उसने कहा— तुम फ़ौरन खेत में जाकर शेर से कहो कि मेरी बित्तो तुम्हारे खाने के लिए एक घोड़ा लेकर आ रही है।' को कुछ इस तरह पढ़ा—

'बित्तो को एक तरकीब सूझी। उसने कहा— तुम जल्दी से खेत में जाकर शेर से कहना कि मेरी बीवी तुम्हारे खाने के लिए एक घोड़ा लेकर आ रही है।'

मुदिता ने कहानी में छपे कुछ शब्दों की जगह अपने शब्दों का इस्तेमाल किया। यह 'पढ़ना' बताता है कि मुदिता समझ के साथ पढ़ रही है, क्योंकि अर्थ वही है। दरअसल, कहानी जब शुरू होती है तो बच्चों के मस्तिष्क में वह कहानी अपने हिसाब से अपने शब्दों के साथ आगे बढ़ने लगती है। लेकिन अर्थ मौजूद रहता है। आप देख सकते हैं कि मुदिता ने जिन शब्दों का प्रयोग किया है, उनसे वही अर्थ प्रेषित हो रहा है। पढ़ते समय बच्चों की ज़रूरत के अनुसार मीता ने उनके पढ़ने में मदद की। बच्चों का हौसला भी बढ़ाया ताकि वे 'पढ़ना-सीखना' जारी रख सकें।

भाषा सीखने-सिखाने के दौरान आकलन

मीता ने देखा कि—

- श्यामला छपी हुई कहानी को अपनी गति से पढ़ती है।
- अली पूरे वाक्य के हर शब्द को अलग-अलग करके पढ़ता है।
- जावेद पढ़ने के संदर्भ में संघर्ष की स्थिति में है। वह एक ही शब्द को दो-तीन बार दोहराता है, फिर आगे बढ़ता है।

चिंतन-बिंदु

- आपके विचार से अली और श्यामला के पढ़ने में क्या अंतर है?
- पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में शब्दों को दोहराना या छपे हुए शब्दों की जगह दूसरे शब्दों का प्रयोग मान्य है?
- 'पढ़ना' में क्या महत्वपूर्ण है— तेज़ गति या अर्थ? और क्यों?

भाषा और सामाजिक सरोकार

इस कहानी के माध्यम से बच्चों के साथ महिलाओं के काम करने की स्थिति के बारे में भी बातचीत की जा सकती है—

- तुम घर में क्या-क्या काम करते हो?
- घर में कौन क्या-क्या काम करता है?
- तुमने अपने आस-पास औरतों और लड़कियों को कहाँ-कहाँ काम करते हुए देखा है?
- औरतों और लड़कियों को क्या-क्या काम करते हुए देखा है?
- काम करने में उन्हें कौन-सी दिक्कतें आती होंगी?
- क्या काम करने के मामले में औरतें और लड़कियाँ किसी से कम हैं? क्यों?
- यह बातचीत बच्चों में जेंडर संबंधी संवेदनाओं को जगाने का काम करेगी। भाषा का एक काम यह भी है— समाज को समझना!

चिंतन-बिंदु

'बहादुर बित्तो' कहानी में जेंडर से जुड़े अनेक मुद्दे हैं। कक्षा तीन, पाँच और आठ के बच्चों के साथ इसी कहानी के माध्यम से जेंडर संबंधी मुद्दों पर बात करते हुए आप अपने सवालों और प्रतिक्रियाओं में क्या अंतर लाएंगे और क्यों?

भाषा में संदर्भ

भाषा में संदर्भ की एक खास भूमिका होती है जो सटीक अर्थ तक पहुँचने में मदद करती है। संदर्भ बदलते ही अर्थ भी बदल जाता है। 'बहादुर बित्तो' कहानी में ऐसी अनेक जगह हैं जो बच्चों को संदर्भ में भाषा-प्रयोग को समझने में मदद करती है।

मुहावरे

मीता ने कहानी में आए दो वाक्यों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित किया—

- उन्हें देखते ही किसान के होश-हवास गुम हो गए।
- शेर के होश-हवास उड़ गए।

मीता ने बच्चों से पूछा—

- क्या इन दोनों बातों को किसी और तरह से कहा जा सकता है?
- 'होश-हवास गुम होने' का क्या मतलब है?
- 'डर जाने' की बात बताने के क्या कुछ और तरीके हैं?

मीता ने बच्चों के साथ डरने के भाव को अभिव्यक्त करने वाले कुछ और मुहावरे साझा किए और विशिष्ट भाषा-प्रयोग यानी मुहावरों के प्रयोग को समझने में मदद की—

- किसान के पैरों तले ज़मीन खिसक गई।
- शेर की जान सूख गई।
- भेड़िए की आँखों के आगे अँधेरा छा गया।

मीता ने बच्चों से कहा कि वे ऐसी स्थितियाँ बताएँ, जब उन्हें डर लगा हो।

उच्च कक्षाओं में मुहावरों का प्रयोग करते हुए कहानी, अनुच्छेद, अनुभव लिखने के लिए कहा जा सकता है। वास्तव में, कहानी को जितना पढ़ते जाएँगे, उतनी बार भाषा को अलग-अलग संदर्भ में देखने के कारण और अर्थ भी मिलते जाएँगे।

प्रयुक्ति (विषयगत विशिष्ट शब्दावली रजिस्टर)

बच्चों ने कहानी में बित्तो के हाथ में दराँती देखी थी। बच्चों से दराँती के इस्तेमाल के बारे में बातचीत की जा सकती है, क्या तुम्हारे घर में भी दराँती है?/उसका कौन इस्तेमाल करता है?/दरौती से क्या-क्या करते हैं? आदि। बच्चों को कुछ अन्य औज़ारों (खुरपी, हथौड़ी, आरी, पेचकस आदि) के चित्र दिखाकर उनके नाम, इस्तेमाल के बारे में बातचीत की जा सकती है। इस तरह से बच्चे अन्य विषयों/कामों से जुड़ी शब्दावली (प्रयुक्ति/रजिस्टर) से भी परिचित हो सकेंगे और जब उन कामों के बारे में बातचीत होगी तो उनसे जुड़ी शब्दावली और भाषा-प्रयोग से भी उनका परिचय होगा।

चिंतन-बिंदु

- भाषा सीखते समय दूसरे विषयों पर भी समझ विकसित होती है। क्या आप स्वीकार करेंगे और क्यों?
- 'बहादुर बित्तो' कहानी में भाषा के सहारे किन विषयों के बारे में बातचीत करने और जानकारी देने की गुंजाइश नजर आती है?

© NCERT not to be republished

'बहादुर बित्तो कहानी के इर्द-गिर्द समस्त कक्षायी प्रक्रियाओं में सुनना-बोलना, पढ़ना-लिखना, सब शामिल रहा। इन प्रक्रियाओं में आकलन भी शामिल रहा। मीता ने अपनी कक्षा के बच्चों के साथ जितनी भी भाषायी प्रक्रियाएँ संपन्न की, उनमें वह अवलोकन के माध्यम से बच्चों के भाषा-आकलन का कार्य भी करती गई, ताकि आवश्यकतानुसार उनकी उचित मदद की जा सके। मीता ने भाषा-आकलन करते समय अनेक आकलन बिंदुओं का ध्यान रखा। आइए, तालिका के माध्यम से उन आकलन बिंदुओं को समझने की कोशिश करते हैं।

बच्चों द्वारा भाषा-प्रयोग, फिर चाहे वह मौखिक भाषा हो या लिखित भाषा। बच्चों के संदर्भ में ही उनका आकलन किया जाना चाहिए। बच्चों की आपसी तुलना उचित नहीं है, क्योंकि सभी बच्चों में व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती हैं और उनका स्वागत किया जाना चाहिए। बच्चों की भाषा के आकलन से प्राप्त जानकारी के अनुसार बच्चों को आवश्यकतानुसार मदद उपलब्ध करायी

भाषा-आकलन के बिंदु

सुनना-बोलन	पढ़ना	लिखना
दूसरों की बातों को धैर्य और रुचि के साथ सुनना सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की पहल • अपनी भाषा में आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कहना	• पढ़ने के प्रति ललक/रुचि • अनुमान लगाते हुए पढ़ना • पढ़ते समय विभिन्न युक्तियों का प्रयोग	• लिखने की उत्सुकता/पहल • संदर्भ के अनुसार शब्दों और वाक्यों का चयन
• लक्ष्य भाषा में अपनी बात कहना • अपनी बात के लिए तर्क देना • अभिव्यक्ति विचारों की मौलिकता व नवीनता • विचारों में क्रमबद्धता • बोलने में स्पष्टता, उचित उतार-चढ़ाव, गति, प्रवाह के साथ अपनी बात कहना	• पढ़ी गई सामग्री से अर्थ-निर्माण • सहज उतार-चढ़ाव, प्रवाह और गति के साथ भावानुसार पठन • पढ़ी गई सामग्री के बारे में अपनी स्व-नियंत्रित लेखन की ओर बढ़ना प्रतिक्रिया/राय आदि व्यक्त करना, प्रश्न पूछना, जिज्ञासा व्यक्त करना	• अभिव्यक्ति, विचारों की मौलिकता, नवीनता व कल्पनाशीलता • विचारों में क्रमबद्धता • स्व-नियंत्रित लेखन की ओर बढ़ना • विराम-चिह्नों का प्रयोग • भाषा का सृजनशील प्रयोग

भाषा-आकलन के ये बिंदु प्रस्तावित हैं, अंतिम नहीं! कक्षा और बच्चों के स्तर और भाषा संबंधी कक्षायी प्रक्रियाओं के अनुसार आकलन की रूपरेखा और बिंदु तय किए जा सकते हैं। भाषा-आकलन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण बिंदु है—

जा सकती है। आकलन से प्राप्त जानकारी को अन्य शिक्षकों, अभिभावकों और बच्चों के साथ भी साझा किया जाना चाहिए, ताकि बच्चों के भाषा-विकास में सभी अपनी-अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकें।

© NCERT not to be republished